।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

अगस्त 2025

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 05

सुरभि उवास

हे मेरे प्रिय पुत्रों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद।

मेरे प्रिय पुत्रों! आप बहुत ही भाग्यशाली हैं कि आपको ऐसे युग में जन्म मिला जिसमें आपको गाय एक विशेष रूप में मिली है और आपको महापुरुषों द्वारा यह बोध करवाया गया है कि गाय पशु नहीं अपितु गोलोक से धरती पर उतरा एक दिव्य प्राणी है जो भगवान को अति प्रिय है। गाय भगवान की इष्ट है।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! संतों द्वारा जन–जन तक गोमहिमा का प्रचार प्रसार करने के कारण यह पीढ़ी गाय और गव्यों को समझने लगी है। लेकिन अगली पीढ़ी को गाय से जोड़ने के लिये प्रमाणिक जानकारी वर्तमान पीढ़ी को उपलब्ध करवानी होगी। पंचगव्य से अनेकों औषधियाँ बनती है और ये औषधियाँ रोगों का जड़ से शमन करती है। आप सभी गोमहिमा को जानते हुए भी विश्वास नहीं कर रहे हो। जिन रोगों का पंचगव्यों से उपचार सम्भव है उनके लिये भी आप अन्य पद्धतियों से उपचार लेते हो जबकि वे हानिकारक होती है। पंचगव्य केवल व्याधि का उपचार ही नहीं करता है अपितु मानव का मन और हृदय भी पवित्र कर देते हैं।

हे मेरे प्यारे पुत्रों! आने वाली पीढ़ी आपसे पूछेगी कि गाय और पंचगव्यों की इतनी महिमा बताते हैं तो आपके जीवन में पचंगव्य क्यों नहीं है? वे यह भी पूछेंगे कि अगर आपने जीवन में पंचगव्यों का उपयोग किया है तो उसकी प्रमाणिक जानकारी बताएं। अगर आपने जीवन में पंचगव्यों का उपयोग नहीं किया तो अपनी संतान को क्या जवाब देंगे? केवल बोलने से नहीं, पंचगव्यों को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने से आप गो की सच्ची महिमा का प्रचार कर सकोगे, अन्यथा आप अपने साथ, अपनी संतान के साथ और गाय के साथ छल कर रहे हो।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! इसके लिये आपको अब गोमाता की सेवा के साथ पंचगव्यों के विनियोग की प्रमाणिक जानकारियों करनी होगी और इस सदी में पंचगव्य अन्वेषण और शोध पर ऐसा रचनात्मक कार्य करना होगा जो पिछले 1000 वर्षों में नहीं हुआ। आपको अपने जीवन में पंचगव्य निर्मित औषधियों का अधिक से अधिक प्रयोग कर उसके प्रमाणिक आंकड़े आज समाज के सामने प्रस्तुत करने होंगे ताकि संसार को यह विश्वास हो सके कि जैसा शास्त्र कहते हैं गो वैसा ही दिव्य प्राणी है और वे इस विश्वास के सहारे गाय के निकट आकर अपने जीवन की हर उलझन को सुलझा सकेंगे। यही आप द्वारा की गई मेरी सच्ची सेवा होगी।

आपकी

अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:5

श्रावण मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 अगस्त-2025

1.	**श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद**- परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	04
2.	**श्रीमदभागवत कथा**- पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	09
3.	**भक्त चरित्र**- पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	11
4.	**गीता ज्ञान**- पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज	14
5.	**श्रीराम कथा**- पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	17
6.	**श्री शिव महापुराण कथा** - पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	20
7.	**गीत**- गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी	23
8.	**भज गोविंदम्**- श्रीमदआदिशंकराचार्य द्वारा रचित	24
9.	**अनन्ययोग (अव्यभिचारिणी भक्ति)**- साभार साधक संजीवनी	25
10.	**श्री मद्भागवत कथा**- गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज	28
11.	**जाऊँ तो जाऊँ कहाँ**- सम्पादक, अम्बा लाल सुथार	30
12.	**संस्था समाचार**- जुलाई माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	31

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,

त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क-2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

श्रीमद्भगवत गीता गुरु का उपदेश है

(व्यास पूर्णिमा 10 जुलाई 2025, अभिनव ब्रज मण्डल नंदगाँव)

सर्वेश्वर सच्चिदानंदघन भगवान वेदव्यास जी वाणी के रूप में सभी के अंतर में विराजमान है उनका पावन स्मरण करते हैं, उन्हीं की उपास्या, आराध्या, पूज्या, सेव्या वेदलक्षणा गोमाता और उसके अखिल गोवंश की वंदना करते हैं, भगवान श्री गोवर्धननाथजी महाप्रभु का पावन स्मरण करते हैं। वेदव्यास जी भगवान के प्रकट उत्सव में यहाँ विराजमान हमारे परम आत्मीय पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज, पूज्य महंत श्री योगेश दास जी महाराज, हमारे अन्य सभी संतगण, श्री पथमेड़ा गोधाम महातीर्थ के ट्रस्टी गण, गोभक्त कार्यकर्ता, श्रद्धालु भाई, बहन, बालक सभी को सादर सप्रेम जय गोमाता जय गोपाल।

भगवान वेदव्यास जी के चरणों में प्रणाम करते हैं उनकी पीठ, उनके आसन को प्रणाम करते हैं, वंदन करते हैं। जैसा कि अभी आपने पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज से सुना कि यह आज जो आषाढ़ माह की पूर्णिमा है यह भगवान वेदव्यास जी का अवतरण दिवस है। भगवान वेदव्यास जी के अवतरण दिवस को गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं क्योंकि भगवान वेदव्यास जी सम्पूर्ण गुरु है। धरती पर गुरु तीन प्रकार के होते हैं। आचार्य कोटि के गुरु, अवधूत कोटि के गुरु और लौकिक गुरु। आचार्य कोटि के गुरु वे होते हैं जो शास्त्रों और ग्रंथों के ज्ञाता होते हैं, उच्च नैतिक मूल्यों और आदर्शो को अपनाते हैं और अपने अनुयायियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने और उन्हें अगली पीढ़ियों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आचार्य कोटि के गुरु अपने ज्ञान, अनुभव और आध्यात्मिक समझ के लिए सम्मानित होते हैं और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, उनकी वाणी और आचरण सब कुछ अनुकरणीय होते हैं। परलोक में भी आचार्य कोटि के गुरु जो स्वयं जीवन में आचरण करते हैं और हमको भी सिखाते हैं।

अवधूत कोटि के गुरु कभी-कभी ही कुछ बोलते हैं और उनका आचरण सबके लिए अनुकरण करने योग्य नहीं होता है, केवल उनके संकेत हमारे लिए आशीर्वाद और प्रेरणा देने वाले होते हैं। आचार्य कोटि के गुरु होते हैं उनकी रहनी, करनी और कथनी सब हमारे काम की होती है। वे कैसे रहते हैं, क्या करते हैं, क्या बोलते हैं सब हमारे अनुकरण के योग्य होते हैं। लौकिक गुरुओं को तो हम सब जानते ही हैं।

वेदव्यास जी की वाणी में लौकिक ज्ञान भी है, पारलौकिक ज्ञान भी है, व्यावहारिक ज्ञान भी है, भाषाई ज्ञान भी है, तकनीकी ज्ञान भी है और वो अवधूतों का ज्ञान भी है। सनातन धर्म में आचार्य कोटि के जितने भी गुरु हुए हैं उनमें सबके मूर्धन्य या उनको सबको आत्मसात् करने वाले या उन सब आचार्यो को प्रकाश मिला है वह भगवान श्री वेदव्यास जी से ही मिला है, उन सबके परम आचार्य भगवान वेदव्यास जी ही है।

ऐसे ही इस कल्प के अवधूत कोटि के जितने भी आचार्य हुए हैं उन सबके परम गुरु भगवान दत्तात्रेय है। पर वेदव्यासजी हमने जैसा कहा लौकिक,

पारलौकिक, व्यावहारिक, तकनीकी, भाषाई आदि समस्त प्रकार के ज्ञान के परम ज्ञाता है।

उपनिषद वेदांत को कहते हैं। वेदांत वेदों का सार तत्व है। उपनिषदों का दूध गीता है। उपनिषद सब गायें हैं, दोहने वाले भगवान है, गीता उसका दूध है और उसका भोक्ता जीव रूपी अर्जुन है। तो यह जो गीता है यह सदगुरु देव भगवान का उपदेश है, गुरु का उपदेश है। जितने गुरु धरती पर हुए हैं पहले, अब है या आगे होंगे वे सब गीता के ज्ञान का थोड़ा-थोड़ा प्रसाद लेकर हम सबको बांटते हैं। अर्थात पूर्ण गुरु भगवान व्यास ही है। व्यासजी और भगवान श्रीकृष्ण में अंतर नहीं है। भगवान श्री कृष्ण वेदव्यासजी की प्रयोगशाला का एक दिव्य यंत्र है। यह जो गीतारूपी वाणी है भगवान श्रीकृष्ण की, यही गुरु उपदेश है। इससे उत्तम, इससे सरल, इससे श्रेष्ठ और कोई गुरु उपदेश हो नहीं सकता और होना संभव भी नहीं है, क्योंकि इसके वक्ता स्वयं भगवान हैं।

भगवान के मुख से निकला वेद तो पहले श्री ब्रह्माजी में आया, ब्रह्माजी से फिर ऋषियों ने समाधि में देखा और फिर हमें प्राप्त हुआ, जबकि गीताजी तो सीधी भगवान की वाणी है। इसलिए आज आप सबको गीताजी का सरल रूप हिन्दी में गीता-माधुर्य प्राप्त होगा जो परम श्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदास जी महाराज ने 'साधक संजीवनी' लिखने से पूर्व सरल प्रश्न उत्तर शैली में इसकी रचना की है। 'साधक संजीवनी' जो गीताजी पर स्वामीजी द्वारा की गई विस्तृत टीका है उसको अच्छी तरह से समझना है तो पहले गीता माधुर्य पढ़ना आवश्यक है। गीता-माधुर्य के प्रारंभ में एक श्लोक लिखा है, वो इस प्रकार है-

जिज्ञासापूर्तये टीका लिखिता साधकस्य या।
संजीवनीप्रवेशाय माधुर्य लिख्यते मया।।

साधकों की जिज्ञासा पूर्ति के लिए गीताजी पर 'साधक संजीवनी' नामक टीका लिख रहे हैं उसमें प्रवेश करने के लिए मैं गीता-माधुर्य लिख रहा हूं। अगर कोई गीता और उस पर लिखी जा रही टीका 'साधक संजीवनी' को अच्छी तरह से समझना चाहता है तो उसे पहले गीता-माधुर्य पढ़ना चाहिए। व्याकरण में एक सूत्र है- 'पाणिनीय प्रवेशाय लघु सिद्धांत कौमुदीम्' अर्थात् पाणिनि में प्रवेश करना हो तो पहले लघु सिद्धांत कौमुदी पढ़ो। ऐसे ही 'साधक संजीवनी' में प्रवेश करना है तो पहले गीता-माधुर्य पढ़ो। गीता-माधुर्य बहुत सुंदर और सरल है। हमने तो पहले यही पढ़ी। इसको पढ़कर लगा कि जिसने इसकी रचना की है वो निरंतर भगवान से मिला हुआ महापुरुष है, वह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। उसके बाद ही हम स्वामीजी से मिलने गए, उनके दर्शन करने गए।

तो यह गीता-माधुर्य आज आपको प्राप्त हुई है, यह साक्षात् भगवान का उपदेश है। अगर हमको आत्म कल्याण के लिए कोई उपदेश चाहिए तो इधर उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है। गीता-माधुर्य मिल गई, गीता मिल गई अब कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है और सेवा के लिए गोमाता मिल गई हम तो परम सौभाग्यशाली हैं। व्यासजी के उपदेश का सार है गीता और गाय, दोनों ही हमको मिल गए। गीताप्रेस के रूप में गीताजी प्राप्त है हमें और श्री गोधाम पथमेड़ा के रूप में गाएं प्राप्त है हमें। दोनों ही हमें प्राप्त है।

सज्जनों कल हमें बताया कि हमारे अभियान से जुड़े हुए बहुत सारे भाई-बहन गुरु और गुरु मंत्र के लिए इधर-उधर जाते हैं और फिर वे गुरु लोग गाय से उनको दूर करते हैं और अपने संकल्प की पूर्ति में लगाते हैं, तो उससे गोसेवा में हानि हो सकती है। पहली बात तो गोसेवा गोपाल का कार्य है गोवर्धन नाथ जी का कार्य है, वे जिन-जिन को चाहेंगे उनको तो चुन-चुन कर इसमें लगाएंगे ही, उससे गोसेवा में कभी हानि नहीं हो सकती। उनकी हानि होगी जो गाय से दूर होगा या किसी को गाय से दूर करेगा। गाय की तो क्यों हानि होगी, यह तो गोविंद का कार्य

है। दूसरी बात आप वास्तव में अगर भगवान को चाहते हो, भगवतप्राप्ति के रास्ते को खोजते हो तो उसके लिए यह सरल रास्ता है कि गीता को अपनाओ और गोसेवा करो। गीता महाभारत का सार है ऐसे ही गीता का सार शरणागति है, भगवत शरणागति।

हमारा एक-एक श्वास भगवान के चरणों में अर्पित होवे। 24 घंटे में 15- 20 मिनट भी हमारी एक-एक श्वास भगवान के चरणों में अर्पित हो तो जैसा अभी राधाकृष्णजी महाराज बता रहे थे कि यह तुलसी दल अर्पित कर रहे हो वह तुलसी क्या है, जिसे अर्पित कर रहे हो वो क्या है यह समझने से आपकी क्रिया सार्थक होगी। क्रिया तो गौण है मूल तो भाव है, हम किस भाव से, किस लक्ष्य से क्रिया कर रहे हैं अन्यथा क्रिया तो यंत्र से भी हो जाती है। आजकल अधिकतर यंत्रवत क्रियाएं हो रही है। जप हो रहा है, कीर्तन हो रहा है, पाठ हो रहा है लेकिन उसमें भाव शून्यता है, लक्ष्य का अभाव है तो यंत्रीकरण है उससे तो अच्छा है कैसेट चढ़ा दो। शाम को हमारे गोवर्धन नाथजी की आरती करते है, कितनी सुंदर होती है। भाव हो, लक्ष्य हो तो एक आवर्ती भी, आपका एक तुलसी दल भी कल्याण करने वाला होगा, परम शांति देने वाला होगा। तुलसी दल यह आपकी श्वास है और हाथ है वह भगवान का नाम है। तो श्वास भगवान के नाम के साथ मिलाकर भगवान के चरणों में अर्पित करो।

अभी आप यहाँ विराजे हो, कमर सीधी करके बैठ जाओ। जो श्वास आ रही है उसे भगवान के चरणों से भगवान के नाम जप के साथ जैसे कृष्ण, कृष्ण कहते हुए खूब गहरी श्वास लें और फिर कृष्णें कृष्ण कहते हुए श्वास कहाँ छोड़ें, भगवान के चरणों में छोड़ें। 5-7 मिनिट ऐसे करें और बीच में जो चिंतन आवे उनका विरोध ना करें उनको आने जाने वाले बादलों की तरह देखें तो आपको परम शांति की अनुभूति होगी, आपका मस्तक है वह महान विश्राम पाएगा। हमको हमारे साथी बोलते हैं कि आप रात को सोते नहीं हो, रात-दिन दौड़ते हो, भागते हो तो आपको थकान क्यों नहीं आती है? थकान तो आती है लेकिन हम विश्राम पाते हैं भगवान के चरणों में थोड़ी-थोड़ी देर में ठाकुरजी के चरणों में विश्राम करते हैं। अपने आपको भगवान के चरणों में अर्पित कर देना नाम के साथ, श्वास के साथ अपने को भी वहाँ छोड़ देना ऐसा करने से धीरे-धीरे श्वास रुक जाएगी, विचार भी रुक जाएगा उस समय जो क्षण होगा श्वास के रुकने का, विचारों के रुकने का वो क्षण परम विश्राम का होगा। वो सच्ची भगवान की शरणागति होगी।

इसलिए भगवान ने कहा **'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज:'** सब उपायों को छोड़कर मेरी शरणागति स्वीकार करो **अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि: मा शुच:** मैं तुझे सब पापों से मुक्त कर दूंगा। पाप क्या है? यह जो रजोगुण है, अशांति है यही पाप है। रजोगुण के कारण ही अशांति है। भगवान उसे मुक्त कर देंगे अगर हम भगवान की शरणागति स्वीकार करेंगे। शरणागति स्वीकार करने का मतलब है हमें अपने आपको श्वासों के साथ में भगवान के चरणों में अर्पित करना। प्राण भी रुक गए, विचार भी रुक गए। मन, प्राण और विचार सब मनन से होते है, मनन होता है न, उससे विचार होता है फिर बुद्धि उसमें निश्चय करती है। अगर प्राण शांत होता है तो कुछ देर के लिए मन भी शांत होता है, मन शांत होता है तो प्राण भी शांत हो जाते हैं।

आप सहज रूप से भी भगवत शरणागत हो सकते हो। चुपचाप भगवान के शरण हो जाओ प्राण रुक जाएंगे। इस चुपचाप अवस्था में आप कितनी देर रह सकते हो, कुछ क्षण भी रहोगे तो भी आपको बड़ा विश्राम मिलेगा। यह परम पुरुषार्थ है। यह करना, वह करना यह तो ठीक है लेकिन कुछ ना करना यह बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। यह करने वाले

वह करने वाले दुनिया में बहुत मिलते हैं और करते भी है, मगर कुछ न करने की स्थिति भगवान की कृपा से प्राप्त होती है।

भगवत शरणागति आप अपने आपको श्वासों के साथ भगवान के चरणों में अर्पित करें और शांत हो जाएं जैसे ही आप कुछ देर गहरी सांस लेंगे और भगवान के नाम के साथ में सांसों को धीरे-धीरे भगवान के चरणों में छोड़ेंगे, जोर नहीं देना, प्रयास नहीं करना धीरे-धीरे छोड़ना, सहज रूप से जैसे श्वास आ रही है उसके साथ घूंट-घूंट नामामृत पीएं, जैसे घूंट-घूंट पानी पीते हैं न ऐसे श्वास के साथ नाम को पीएं, धीरे-धीरे-धीरे पीएं और जब वो भर जाए तो अपने आपको नाम के साथ भगवान के चरणों में धीरे-धीरे अर्पित करें। ऐसे करते-करते या तो अंदर जाते समय थोड़ी देर के लिए अंदर रुकें या श्वास बाहर पूरा चला जाए उस समय थोड़े रुक सकते हैं। यह रुकना अपने आप होगा। आप दबावपूर्वक रुकें भी नहीं और दबाव पूर्वक श्वास भी न लें। अगर यह अभ्यास आप प्रातःकाल, सायंकाल मध्यकाल में, किसी काम को शुरू करने पर, किसी काम के पूरे होने पर, सोने से पहले, जागने के बाद या दिन में जब भी आपको समय मिले तब आप यह पुरुषार्थ प्रयोग करें तो आपको शांति भी मिलेगी, मुक्ति भी मिलेगी और भक्ति भी मिलेगी।

शांति मुक्ति और भक्ति तीनों का साधन अपने आपको भगवान के चरणों में अर्पित करना संतवाणी में अनेकों संकेतों के रूप में यह बात कही है- **कहता हूँ कह जाता हूँ, कहाँ बजाऊं ढोल, श्वासा खाली जाती है यह तीन लोक का मोल**। एक-एक श्वास में ऐसा सामर्थ्य है, पता नहीं किस क्षण आपकी श्वास भगवान के चरणों में अर्पित कर आपको विचार शून्य बना दे और उसी समय आप महाआकाश प्रभु के चरणों को पा लें। भगवान की सन्निधि पाने का जो रास्ता है वह यही है। यह श्वास जो आ रही है, जा रही है भगवान तक जाती है जैसे झूला होता है वो इधर जाते समय, उधर जाते समय बीच में सीध में आता है ऐसे ही श्वास आते और जाते समय बीच में जो थोड़ी-थोड़ी संधि होती है वो भगवान के चरणों की होती है। वहाँ रुकना परम पुरुषार्थ है।

आज गुरु पूर्णिमा है इसलिए बात कही है कि भाई आप श्वास के साथ नाम स्मरण करो। इससे आपको लाभ होगा। ऐसे करते हो तो करो पर श्वास के साथ स्मरण करो। श्वास को सावधानी पूर्वक देखते हुए स्मरण करो कि श्वास आ रही है, श्वास जा रही है, कहाँ से यह प्राण शक्ति आ रही है कहाँ जा रही है यह प्राण शक्ति? भगवान से ही आ रही है और भगवान तक जा रही है।

बहुत बातें हैं इसमें पर ये बातें हैं कहने से तो समझ में नहीं आती साधन करने से अनुभूति होती है। अभी जो बताया कि सीखा हुआ ज्ञान तो सीखा हुआ होता है और अनुभव किया हुआ ज्ञान होता है। यह जो पारमार्थिक ज्ञान है वह अनुभव किया हुआ ज्ञान होता है। यह अनुभूति का ज्ञान दो तरह से आता है। एक तो विचार से आता है कि जो सत्य नहीं है उसको सत्य माना है, यह शरीर जो आपका नहीं है उसको अपना मानना छोड़ दो तो भी आपको उस ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। दूसरा विश्वास द्वारा जिस प्रभु को आपने देखा नहीं है सुना है उसको अपना मान लो। संत कहते हैं कि यह गोवर्धननाथ जी हैं तो इनको ऐसा का ऐसा मान लो, अपना सखा मान लो, मित्र मान लो, गुरु मान लो। हाँ ये ही मेरे सखा हैं, मित्र हैं, भैया हैं, पुत्र हैं, माता हैं, पिता हैं, गुरु हैं, मालिक हैं।

भगवान के साथ कोई ना कोई संबंध जोड़ना भक्ति का काम है। भक्ति में भगवान से संबंध जोड़ना होता है और ज्ञान में संसार से संबंध तोड़ना होता है। भक्ति में तोड़ना नहीं है केवल भगवान से संबंध

जोड़ना है भगवान को अपना स्वीकार करना है। जब हम भगवान को अपना मानते हैं तो भगवान हमको अच्छे लगने लग जाते हैं, मीठे लगने लग जाते हैं। भगवान का मीठा लगना ही भक्ति है और कुछ भक्ति होगी पर असली भक्ति यही है।

जीवात्मा का परमात्मा के साथ सदा सर्वदा से संबंध है ही और इस अविनाशी जीवात्मा का संबंध तो सदा बना रहता है, परन्तु शरीर के साथ तादात्म्य के कारण यह भूल गया है। अविनाशी जीव परमात्मा का ही अंश है- 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी'। शरीर संसार का अंश है, शरीर संसार के काम की चीज है। शरीर संसार के काम आएगा और संसार शरीर के काम आएगा, मगर जीवात्मा परमात्मा के काम आएगा और परमात्मा जीवात्मा के काम आएगा। ये दोनों अलग-अलग चीज हैं। इन दोनों को अलग-अलग समझने के लिए भगवान ने मनुष्य को विवेक दिया है। यह विवेक बीज रूप में सबके अंदर है, इसी को ही गुरु कहते हैं। इस विवेक की टकसाल भगवान वेदव्यास है। यह सत् और असत् की खान है भगवान वेदव्यास। वे शरीर और आत्मा को ऐसे अलग-अलग करके बताते हैं कि जिससे मानव इसे आराम से समझ जाता है। भगवान वेदव्यासजी की वाणी से सत् और असत् का व्यवस्थित ज्ञान हो जाता है।

'बिनु सत्संग विवेक न होई'। यह है जो वाणी है वेदव्यासजी की इस वाणी से सत्संग का, विवेक का विकास होता है। विवेक का विकास होने से सत् और असत् दोनों भिन्न-भिन्न दिखते हैं। सत् सत् (ईश्वर) का अंश है और असत् (संसार) असत् का अंश है। यह समझना ही मनुष्यपना है और यह ना समझना पशु समान है। आकार भले ही मनुष्य जैसा हो। पर जब तक हम आत्मा और शरीर को अलग-अलग नहीं समझेंगे तब तक तो हम पशु ही है, पांच पाशों से बंधे हुए पशु। अविद्या, द्वेष, राग, अस्मिता, अभिनिवेश आदि पांच क्लेश है ये पांच पाश हैं। विद्यमान को अविद्यमान और अविद्यमान को विद्यमान मानना उसका नाम अविद्या है। शरीर और संसार विद्यमान नहीं है, ये प्रतिक्षण नहीं में जा रहे हैं उसको है मानना उसी का नाम अविद्या है। ये पाश है, पाशों से बंधा हुआ होता है उसे पशु कहते हैं। जो पाशों से मुक्त करते हैं उन्हें पशुपति कहते हैं। भगवान शिव पशुपति है। भगवान शिव को पशुपति इसलिए कहते है क्योंकि वे ज्ञान रूपी है, कल्याण रूपी हैं। वे ज्ञान से हमें अविद्या से मुक्त करते हैं। तो सज्जनों वेदव्यास जी वाणी, गीता आदि जो ग्रन्थ है उनके अनुसार अपना जीवन बनाएं, उनका अध्ययन करें, मनन करें, सत् और असत् को समझें और अपनी प्रत्येक श्वास को भगवान के चरणों में अर्पित करें, उनके चरणों में विश्राम करें और इस मानव जीवन को धन्य करें। इसी के साथ वाणी को भगवान वेदव्यासजी के चरणों में अर्पित करते हैं। आप सभी का पुनः सादर अभिवादन जय गोमाता जय गोपाल।

मनुष्य का जन्मजात गुरु विवेक

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

एक मार्मिक बात है कि जगद्गुरु भगवान अपनी प्राप्ति के लिये मनुष्य शरीर देते हैं तो साथ में विवेकरूपी गुरु भी देते हैं। भगवान अधूरा काम नहीं करते। जैसे बड़े अफसरों को मकान, नौकर, मोटर आदि सब सुविधाएं मिलती है, ऐसे ही भगवान मनुष्य शरीर के साथ-साथ कल्याण की सब सामग्री भी देते हैं। वे मनुष्य को विवेकरूपी गुरु देते हैं, जिससे वह सत् और असत्, कर्तव्य और अकर्तव्य, ठीक और बेठीक आदि को जान सकता है। इस विवेक से बढ़कर कोई गुरु नहीं है। जो अपने विवेक का आदर करता है उसको अपने कल्याण के लिये बाहरी गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

भगवान की महति कृपा करुणा से परम पवित्र धर्मप्राण भारतवर्ष की पुण्य धरा गुजरात प्रदेश के महानगर जो श्री यमुना जी की बहन तापी जी के पवित्र तट पर स्थित है, ऐसे सूरत महानगर में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मानव जीवन का सर्वोत्त्कृष्ठ फल सत्संग श्रीमद् भागवत की मंगलमय कथा के माध्यम से सुलभ होने जा रहा है। पूज्य श्री अनंतदास जी महाराज सन्मुख विराजमान हैं उनको हम प्रणाम करते हैं एवं विराजमान सभी पूज्य संतों को, ब्राह्मणों को, हरिभक्तों को यथायोग्य वंदन करते हुए इस मंगलमयी कथा का शुभारंभ कर रहे हैं।

गत वर्ष की उस घटना का भी बड़े भावपूर्वक स्मरण कर रहे हैं कि श्रद्धेय सेठ श्री जयदयाल गोयनका जी, भाई श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी, परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज जैसे महान संतों का जीवन पर्यंत जिन्हें सत्संग मिला ऐसे परम सत्संग निष्ठ, गृहस्थ परिवेश में रहते हुए महान संत गोलोक वासी श्री राधाबल्लभ जी जालान का हम अत्यंत भावपूर्वक स्मरण कर रहे हैं, क्योंकि जब-जब कथा होती तो उनकी कुर्सी बस यहीं बिल्कुल सामने रहती थी। वे हमारे आने से कम से कम आधा घंटा पूर्व आ जाते थे और जैसे चकोर चंद्रमा की ओर टकटकी लगाकर देखता है वैसे लगातार हमारी ओर देखते हुए बड़े भाव से जब तक उनके शरीर का सामर्थ्य रहता तब तक वे बैठते थे।

समय से उनका प्रसाद और शयन का नियम रहता था इसलिए और हमारी कथा थोड़ी लेट तक चलती है तो अधिक समय होने पर भी अपने समय से प्रणाम करके चले भी जाते थे। पिछली बार की बात कर रहे हैं हम, उनके जाने का समय हो गया, तो हमने कहा जालान जी राधावल्लभ जी, थोड़ी देर बिराजिये पूरा सुनकर तब जाइएगा। तो बड़ी जोर से हँसकर बोले जो लोगों को तो नहीं सुनाई पड़ा पर हमें सुनाई पड़ा। बोले, बैठेंगे! सुनकर ही जायेंगे। हमें क्या पता सुनकर आज ही वे चले जाने वाले हैं। सुनकर ही वे चले गये।

उनके जैसा भाव था कि हमसे वे कहते थे कि आगे तो भगवान का जो विधान होगा सो होगा, पर मेरी तो इच्छा है कि मेरा जहाँ कहीं शरीर शांत हो, आपकी कथा हो रही हो और इस शरीर पर आपकी दृष्टि पड़ जाए, पथमेड़ा वाले महाराज जी भी आ जाय उनकी दृष्टि पड़ जाए। फिर यह भी बोलते कि मैंने भावुकता में कह दिया आप कहीं बहुत दूर हो तो बिल्कुल मत आना क्योंकि हम तो भावना से आपके निकट ही रहते हैं और कैसा विलक्षण संयोग पथमेड़ा वाले महाराज जी के आने का कोई पूर्व निश्चित कार्यक्रम नहीं था कि वे आ ही रहे हैं, लेकिन वे आ गए, हम भी यहाँ थे ही और इस मध्य में वे गोलोक वासी हुए। उन श्री राधा वल्लभ जालान जी का भी हम स्मरण करते हैं।

जैसा कि शर्मा जी बोल रहे थे संचालन के समय कि गीता माताजी को और श्री गजानन कंसल जी को इस पवित्र आयोजन में प्रतिवर्ष निमित बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है निश्चित ही ये बड़े भाग्यशाली हैं, नहीं तो शर्मा जी हम आपको सच्ची कहें कितने ही लोग ऐसे हैं अभी भी देश में जो सोचते हैं कि हमको एक बार जीवन में महाराज जी व्यासासन पर हो और मुझे यजमान के रूप में बैठकर कथा सुनने को मिल जाए लेकिन संयोग नहीं बन पाता है। निश्चित ही गोमाता की मंगलमयी कृपा से यह सौभाग्य श्री गजानन जी को, उनके पूरे परिवार को और उनके पूरे ईष्ट मित्रों को प्राप्त होता है। हमारे जे. पी. साहब भी खूब उत्साहपूर्वक इस आयोजन में भाग लेते हैं और सभी लोग भाग लेते हैं, सब आए

हुए संतों को ठहराना, उनको पहुँचाना, लाना यह सेवा हमारे विपिन बिहारीदास जी महाराज करते हैं। सभी लोग अपने-अपने कार्य में लगे रहते हैं। ऐसा नहीं लगता है कि नया आयोजन हो रहा है। ऐसा लगता है कि वार्षिक आयोजन है और सहजभाव से प्रतिवर्ष हो भी जाता है।

इस बार ऐसा लग रहा था कि यह नहीं हो पायेगा। उसके दो कारण थे। एक कारण तो यह है कि यह जो समय है यह हमारे पूज्य सदगुरुदेव अनन्त श्री समलंकृत भक्तमाल भाष्यकार श्री भक्तमाली जी महाराज के आविर्भाव का समय है, जयन्ती का समय है और एक सप्ताह का प्रतिवर्ष मलूकपीठ में ही आयोजन होता है और कल से वो आयोजन भी आरम्भ ही है। आश्रम में चल ही रहा है कार्यक्रम। कथा भी, पाठ भी, भक्तमाल भी, समाज का भी, सन्तों का भी सभी चल ही रहा है कल से। आश्रम का कार्यक्रम है इसलिये उसमें भी उपस्थित रहना और फिर कुंभ में भी पहुँचना दोनों आवश्यक था।

लेकिन राकेश जी बड़े कुशल हैं, बड़े चतुर हैं। इन्होंने कहा कि यह सहज संजोग हो रहा है तो गुरु जी वाला उत्सव और यह दोनों उत्सव यहाँ सूरत में ही मना लें। वहाँ तो मनेगा ही। इस बहाने जड़खोर गोसेवा समिति के सभी लोग एक साथ बैठ जायेंगे और उनके मन में गोसेवा का उत्साह बना रहेगा। सेवा तो करते ही हैं, मगर आप नहीं पधारेगे तो थोड़ा उत्साह कम तो होगा ही, सेवा तो करते ही हैं। इन्होंने कहा कि आप जरूर आ जाएं। तो एक विशेष ऐसा समझें की विशेष हेतु से उनके विशेष आग्रह से यह कार्यक्रम बना है। यहाँ भक्तमाल की कथा भी हो चुकी है, भागवत जी की कथा कई वर्षो से चल रही है। अभी सब प्रेमियों का आग्रह था कि दशम् स्कन्ध सुनावें। इस समय दशम् की चर्चा चल रही है और इस बार बड़ी विलक्षण बात है कि गोचारण लीला से ही कथा का शुभारंभ हो रहा है। पिछली बार दशम् स्कन्ध से पूर्व तक की भूमिका बनी थी और अब वह गोचारण से इस बार कथा का शुभारंभ हो रहा है। यह भी एक संयोग की बात है कि हमारे पीपाड़ वाले महन्त श्री रामदास जी महाराज भी जो खूब तुलसी मालाएं पहनकर विराजमान हैं, वे भी पधारे हैं और विराजे हैं। आप बहुत अच्छा गाते हैं, बहुत बढ़िया सत्संग करते हैं और हमारे नवसारी वाले पूज्य श्री महन्त जी महाराज स्वामी जी कृपा करके पधारे हैं आप बड़े गायत्री के उपासक हैं। भगवती वहाँ विराजमान हैं, भगवान शिव विराजमान है और बड़ी अद्भुत अनुपम गोसेवा करते हैं बहुत बढ़िया गोसेवा करते हैं। स्वयं अपने हाथ से अत्यंत श्रद्धा पूर्वक गोसेवा करते हैं। हमारे नवसारी वाले स्वामी जी और इस बार तो जब दास रेवासा धाम में था उसी समय आपका सीकर में यज्ञ चल रहा था बालाजी धाम में तो उस यज्ञ में भी हमको जाने का अवसर प्राप्त हुआ। यद्यपि खूब व्यस्तता थी क्योंकि हमको फतेहपुर श्री बुद्धगिरी मढ़ी के महंत श्री स्वामी दिनेश गिरी जी महाराज के यहाँ बड़ा आयोजन था, वहाँ हमें जाना था इस कारण से हम थोड़ा कम समय दे पाए। लेकिन हमें भी थोड़ी देर यज्ञ में उपस्थित होकर के और श्री बालाजी को, यज्ञ नारायण को और ब्राह्मणों को वंदन करने का सौभाग्य मिला।

आज थोड़ा विलंब हुआ है और जड़खोर के निमित्त यह पवित्र भाव को लेकर कथा है तो सज्जन जी के मनोभाव और अचिंत्य जी के मनोभाव वह भी अत्यंत आवश्यक था कि लोग सुनें। अचिंत जी को तो हमने पहली बार ही सुना है। इसके पहले कभी मेरे सामने बोले नहीं है, लेकिन बहुत बढ़िया बोले, बहुत अच्छा बोले। लेकिन यह बात सुनकर बड़ी पीड़ा हुई हमारे मन में कि कंपनियों वालों ने 26000 करोड़ सीएसआर में खर्च किया उसके भी वास्तविक स्वरूप को इन्होंने बताया कि 100 रुपये देंगे तो कहेंगे पांच तुम रख लो या 10 रख लो ....शेष अगले अंक में

90 या 95 हमको दे दो ऐसा भी कुछ लोग करने वाले हैं और उसमें भी आपने बताया कि यदि देशी गोवंश

भक्त चरित्र

परम् भक्त त्रिलोचन जी का चरित्र

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

अरे! और तो और भक्त के तो भगवान भी नौकर बनने के लिए तैयार है। भक्त त्रिलोचन जी का चरित्र आता है। त्रिलोचन जी संत ज्ञानेश्वर जी के शिष्य थे। वैसे थे वे महाजन, वेश्यों में महाजन अटक वाले भी आते हैं। जैसे अलग-अलग उपाधियां वाले होते हैं ऐसे महाजन भी होते हैं। तो वे महाजन थे, महाजनी का धंधा उनके यहाँ होता था। बड़े साधु सेवी थे वे। उनके कोई संतान नहीं थी। भगवान की कृपा से धन की कोई कमी नहीं थी। धंधा अच्छा था, सब काम बढ़िया था। ठाकुर सेवा और संत सेवा में उनका सब समय बीतता था। भगवान की भक्ति थी इसलिए उनके मन में अभाव का भी अनुभव नहीं था। बेटा-बेटी का क्या करना? नहीं हुआ तो नहीं हुआ।

लेकिन एक बात की चिंता त्रिलोचन जी के मन में रहने लगी कि अब हम हो गए हैं बूढ़े। ठाकुर सेवा तो अपने हाथ के करने की चीज है, किसी नौकर-चाकर के हाथ से नहीं की जा सकती। व्यक्ति को स्वयं ही ठाकुर जी की सेवा में संलग्न होना चाहिए। अब तक तो हम अपनी पत्नी के संग साधु सेवा में खड़े रहते थे अब हम बूढ़े हो गए हैं, आगे से करेगा कौन? अब संत भगवान घर में आते तो हैं लेकिन कोई करने वाला नहीं होता है तो वे स्वयं ही सेवा में लग जाते हैं, यह हमको अच्छा नहीं लगता है। मन में सोचते रहते कि हे प्रभु! ऐसा कोई सेवा करने वाला भक्त मिल जाता तो हम उसको मुँह मांगा वेतन दे देते और वह साधुओं की सेवा तो संभाल लेता क्योंकि अब हमारा शरीर तो वृद्ध हो रहा है, मेरी घरवाली भी बेचारी बहुत बूढ़ी हो गई है।

त्रिलोचनजी सदैव इसका चिंतन करने लगे की अब कैसे साधु संतों की सेवा होगी? श्री पंढरीनाथ भगवान पंढरपुर के ठाकुरजी त्रिलोचनजी की यह दशा सहन नहीं कर पा रहे थे। इस कारण उन्होंने स्वयं नौकर बनने की सोची और ठाकुर जी स्वयं नौकर बनकर आ गए।

अब ठाकुर जी नौकर के स्वरूप में त्रिलोचन जी महाराज के पास पहुंचे। ठाकुर जी एक विचित्र रूप धारण किया हुआ था जिसमें फटी सी कामरी, फटे पुराने कपड़े, 15 16 साल की उम्र, केश घुंघराले परंतु स्वरूप अति सुंदर, परंतु ऐसा लग रहा था जैसे महीनों से नहीं नहाया हो। शरीर पर धूल मिट्टी चढ़ी है। केस उलझ के जटा जैसे हो गए हैं।अभी तक त्रिलोचन महाराज जी अपनी पत्नी के साथ ठाकुर जी की सेवा किया करते थे। परंतु अब उनका शरीर वृद्ध हो चुका था वह सोच रहे थे हे प्रभु अब कोई सेवक मिल जाता जैसे साधु संतों की सेवा होती रहती और हमारा भी काम चलता रहता। त्रिलोचन जी महाराज सदैव इसका चिंतन करने लगे की अब कैसे साधु संतों की सेवा होगी। पंढरीनाथ भगवान पंढरपुर के ठाकुर जी त्रिलोचन जी महाराज की यह दशा सहन नहीं कर पाये इस कारण उन्होंने स्वयं नौकर बनने की सोची और ठाकुर जी स्वयं नौकर बनकर आ गए। यह सत्य घटना है, भक्तमाल में कथा है यह। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

अब ठाकुर जी नौकर के स्वरूप में त्रिलोचन जी महाराज के पास पहुँचे। ये तो नटवर नागर है। ठाकुर जी एक विचित्र सा रूप धारण किये हुए हैं। एक फटी सी कामरी, फटे पुराने कपड़े, 15-16 साल की उम्र, केश घुंघराले परंतु स्वरूप अति सुंदर, परंतु ऐसा लग रहा था जैसे महीनों से नहाये नहीं हो। शरीर पर धूल मिट्टी चढ़ी है। केस उलझ के जटा जैसे हो गए हैं। एक टूटी सी लकड़ी लिए हैं।

त्रिलोचन जी जप भी कर रहे थे और रो भी रहे थे। उनके नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हो रही थी कि प्रभु कोई सेवक मिल जाता जो संतों की सेवा करता

रहता। तब तक ठाकुर जी आए। सेठ जी राम राम। जय जय राम कृष्ण हरि। त्रिलोचन जी ने अपने नेत्र खोले सोचने लगे बड़ा सुंदर बालक है। लगता है नहाता-धोता नहीं है। फटे पुराने कपड़े हैं, पैर में पुरानी सी जूतियाँ पहनी हुई है। उन्होंने पूछा बेटा तुम्हारा नाम क्या है? ठाकुर जी बोले अरे बाबूजी नाम सुनकर क्या करोगे? नहीं-नहीं नाम तो जरूरी है। नाम तो बताना पड़ेगा बेटा। नाम क्या है आपका? ठाकुर जी ने नाम बताया अपना अंतर्यामी। हमारा नाम अंतर्यामी है। त्रिलोचन जी बोले नाम तो बढ़िया है अंतर्यामी, तो तुम सबकी अंतर्मन की जानते होंगे? ठाकुर जी मुस्कुरा गए, कुछ बोले नहीं। त्रिलोचन जी ने पूछा आप कहाँ रहते हो? ठाकुर जी बोले ऐसा कोई हमारा ठिकाना नहीं है जहाँ जगह मिलती है वहीं रह लेते हैं।

त्रिलोचन जी को लगा बेचारा अनाथ है। त्रिलोचन जी ने पूछा तुम्हारे माता-पिता का परिचय। ठाकुर जी बोले अगर हमारे माता-पिता होते तो हमारी यह हालत होती? हम भी कहीं किसी अच्छी हालत में होते।

त्रिलोचन जी महाराज बोले- तो ऐसे क्यों भटक रहे हो? ठाकुर जी बोले हम कुछ धंधा पानी के लिए भटक रहे हैं। धंधा पानी मिल जाए तो उदर पोषण हमारा सही से हो जाए।

त्रिलोचन जी बोले कुछ काम धंधा जानते हो? ठाकुर जी बोले कि हमें चारों वर्ण और चारों आश्रमों की क्या मर्यादा है, क्या सेवा है, क्या खाना-पीना है वह सब मालूम है। यह सुनकर त्रिलोचन जी खूब हँसे और बोले तुम्हारी उम्र तो 15-16 से ज्यादा समझ में नहीं आ रही।

बोले इतना अनुभव तुम्हें कैसे हो गया? ठाकुर जी बोले आप विश्वास करो ना करो हम सब जानते हैं। त्रिलोचन जी ने पूछा साधु सेवा करना आता है? ठाकुर जी बोले साधु सेवा करते-करते मेरे जन्म बीत गये। त्रिलोचन जी बड़े जोर से हँसे और बोले लड़का कुछ करे या ना करे पर बोलता बहुत अच्छा है। इसको रख लो अपने पास। त्रिलोचन जी बोले तुम्हें इतना अनुभव है और तुम इतने योग्य हो तो तुम्हें कहीं नौकरी क्यों नहीं मिली। कुछ ना कुछ खोट तुम्हारे में जरूर है। ठाकुर जी बोले हाँ एक खोट है हमारे भीतर। हम काम से पीछे हटते नहीं है, सब काम करते हैं पर हमारे बारे में कोई शिकायत करने लग जाए तो हम वहाँ पर टिकते नहीं हैं। हम वह जगह ही छोड़ देते हैं। त्रिलोचन महाराज जी ने पूछा क्या शिकायत करते हैं लोग? ठाकुर जी बोले हम खाते बहुत हैं। त्रिलोचन जी हंसने लगे। बोले घर में अन्न धन की कोई कमी नहीं है कितना खाते हो? ठाकुर जी बोले मैं 5 से 7 सेर खा लेता हूँ।

"ठाकुर जी ने ऐसा क्यों कहा होगा? यह बात विचारणीय है क्योंकि अगर घर में ठाकुर जी विराजमान हैं तो उन्हें कम से कम पांच सेर का भोग अवश्य लगाना चाहिए नहीं तो दोष लगता है,"

त्रिलोचन जी ने कहा आप 10 सेर खाओ भले ही 12 सेर खाओ हमारी तरफ से खाने में कोई कभी मनाही नहीं होगी, पर साधु सेवा में कोई कमी नहीं आनी चाहिए।

ठाकुर जी सोचने लगे बड़ा उदार भक्त है। ठाकुर जी ने अपना प्रश्न कड़ा कर लिया और पुनः बोले, हम साधु संतों की सेवा करेंगे, आपके ठाकुर जी की भी सेवा करेंगे, आपकी भी सेवा करेंगे। लेकिन हम रोटी माताजी के हाथ की पायेंगे। आपकी जो गृहणी है, भक्तानी उनको हमारे लिए खाना बनाकर देना होगा। अभी तक त्रिलोचन जी की गृहणी ही खाना बनाती थी तो उन्होंने अपनी गृहणी से कहा, सेवक तो एक मिल गया है परंतु इसने एक विचित्र शर्त रखी है। तुम्हें अपने हाथों से खाना बनाकर इसे खिलाना होगा।

त्रिलोचन जी की पत्नी बहुत सरल थी। वह बोली- अरे कोई बात नहीं, इनके लिये भोजन मैं बना दिया करूंगी। लोग कहते थे तुम्हारा बेटा नहीं, बेटा

नहीं। तो मैं इसे अपना बेटा मानकर ही इसे खिलाऊंगी। त्रिलोचन जी बोले परंतु एक बात का सदैव स्मरण रहे अगर यह कह दिया कि यह पेटू है, बहुत अधिक खाता है तो यह यहाँ से चला जाएगा। त्रिलोचन जी की पत्नी बोली हम क्यों कहेंगे ऐसी बात।

त्रिलोचन जी के यहाँ पर ठाकुर जी ने 13 महीने सेवा की नौकर बनकर। सब तरह की सेवा चौका बरतन से लेकर झाड़ू पोछा लगाने तक, खाना बनाने तक, सब सेवा ठाकुर जी ने त्रिलोचन जी के घर पर की। इतना ही नहीं ठाकुर जी कभी-कभी त्रिलोचन महाराज जी की भी मालिश कर दिया करते थे। उनके कपड़े धो दिया करते थे। उनको चकाचक रखा करते थे।

त्रिलोचन जी महाराज के घर पर ठाकुर जी के आने से रिद्धि-सिद्धि बहुत बढ़ गई। अच्छे-अच्छे साधु-संत भी वहाँ बड़ी संख्या में आने लगे। उत्सव महोत्सव बहुत होने लगे। जो साधु जिस प्रकार की वस्तु पाना चाहता, भगवान वही वस्तु बना देते और सब संतो की निरंतर सेवा किया करते थे।

समाज में त्रिलोचन जी महाराज की जय जयकार होने लगी कि त्रिलोचन जी महाराज के यहाँ साधु-संतों की बड़ी सेवा हो रही है। ऐसा करते-करते 13 महीने बीत गए। एक दिन त्रिलोचन जी की गृहणी एक घर में गयी। वहाँ पर सभी माताएं मिलकर चर्चा करने लगी। एक माताजी ने त्रिलोचन जी की गृहणी से बोला- अरे! तुम्हारे यहाँ अंतर्यामी क्या आया है स्वयं भगवान ही आ गए हैं। ऐसी रिद्धि-सिद्धि घर में आ गई है। सब और नगर में सेठजी की जय जयकार हो रही है। सेठजी की तो रंगत बदल गई है। पर तुम तो अभी भी वैसी हो जैसी थी दुबली पतली। तो उन्होंने कहा अब उनको करना ही क्या पड़ता है कुछ नहीं, खाली माला फेरते हैं, भजन करते रहते हैं, थोड़ा बहुत धंधे पानी की बात होती है तो वह देख लेते हैं। अब उनको कोई काम नहीं है। माताजी बोली तो आपको भी कोई काम नहीं होगा? अंतर्यामी ही आपका भी सारा काम करते होंगे।

त्रिलोचन जी महाराज की गृहणी के मुंह से निकल गया कि नहीं यही तो बात है। अंतर्यामी सब कार्य तो करता है पर अंतर्यामी की सेवा हमको करनी पड़ती है। अच्छा क्या सेवा करनी पड़ती है? हाथ-पांव दबाना, कपड़ा धोना आदि करना पड़ता है क्या? बोले यह तो कुछ नहीं करना पड़ता है पर उसको भोजन बनाकर मुझे देना पड़ता है। अरे बहन, क्या खाता होगा 15-16 साल का लड़का है? दो-चार रोटी खाता होगा। त्रिलोचन जी की गृहणी बोली अरे मत पूछो बात! पांच-सात सेर एक बार में ही खा लेता है। अच्छा? देखने में तो नहीं लगता है, इतना कैसे खा लेता होगा?

त्रिलोचन जी महाराज की गृहणी के मुख से यह बात निकलते ही ठाकुर जी अंतर ध्यान हो गए। ठाकुर जी जब अंतर ध्यान हो गए तो त्रिलोचन जी बहुत दुःखी हुए। उनकी पत्नी भी बहुत दुखी हुई। खाना-पीना छोड़ दिया, रोने लगे। घर-घर जाकर पूछते, मेरा अंतर्यामी देखा है कहीं? अंत में दोनों ने निश्चय किया कि प्राण ही त्याग देंगे।

अब तो साक्षात् ठाकुर जी ही आ गए। बोले हम तो सदा से ही संतों की नौकरी करते हैं। हम तो आज भी तुम्हारे नौकर बनकर आने को तैयार हैं। अब तो और त्रिलोचन जी रोने लगे। बोले जगत के नाथ, जगतपति, लक्ष्मीपति, बैकुंठनाथ, रुक्मणीनाथ को मैंने अपने घर में नौकर बना कर रखा, मेरे पैर दबाये आपने, आपने मेरे बर्तन साफ किये, रसोई बनाई, मैं बहुत अधम हूँ। भगवान ने हृदय से लगा लिये त्रिलोचन जी को। बोले हम तो बहुत प्रसन्न हैं आपकी संत सेवा से।

भक्तमाल की कथा में नाभाजी ने त्रिलोचन जी महाराज को चंद्रमा कहा है। नामदेव जी को भक्ति जगत का सूर्य और त्रिलोचन जी को चंद्रमा। सिखों का जो पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब है उसमें भी श्री त्रिलोचन जी महाराज के पद सम्मिलित किए गए हैं।

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

..... पिछले अंक से आगे

व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य होता है आत्म विकास के साथ राष्ट्र और ब्रह्माण्ड की पुष्टि, समृद्धि के लिये काम करना।

पूज्य स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज बोलते थे कि शरीर संसार से आया है इसलिए शरीर को संसार के लिए छोड़ दो और मन को भगवान के लिए छोड़ दो। मन को भगवान के पास लगा दो और शरीर से संसार की सेवा करो। इससे साधना हो जाएगी। हमारे पूज्य गुरुदेव बोलते थे कि साधना कहाँ होती है? कोने में। वे बांग्ला भाषा में बोलते थे कोने वने मोने। अर्थात् घर के कोने में बैठ जाओ, जंगल में एकान्त में बैठ जाओ और सहज साधना मन में। हमारा मन कहाँ है, भगवान में होना चाहिये।

अभी ऊपर हम समंत पंचक शब्द का अर्थ कर चुके हैं। समंत पंचक के बारे में कुछ किंवदंती है। हमारी भारतीय संस्कृति में भगवान के कई अवतार हुए, उनमें से एक अवतार जो अभी तक भी धरती पर है, उनका नाम है परशुराम जी, भगवान परशुरामजी। भगवान परशुराम जी स्वयं शिवजी के शिष्य थे। उनका वास्तविक नाम था राम। उनका नाम राम से परशुराम कैसे हुआ, इसके बारे में थोड़ा बता देते हैं।

राम भृगुवंशी ऋषि जमदग्नि और माता रेणुका के पुत्र थे। एक बार आश्रम में शिवजी के समक्ष सभी शिष्य बैठे थे। भगवान शिवजी ने अपने शिष्यों की परीक्षा करने के लिये कुछ ऐसे वचन बोले जो सुनने योग्य नहीं थे। ऐसी बात को सुनकर सभी शिष्य सिर नीचे करके बैठ गए। वहाँ राम भी थे। वे खड़े हो गए और भगवान शिव के हाथ में जो फरसा (परशु) था उसको लेकर शिवजी को एक जोरदार आघात लगाया। इस आघात से शिवजी के सिर में गहरी चोट लगी और रक्त निकलने लगा। शिवजी बोले- आप जितने शिष्य यहाँ बैठे हो आप में शक्ति नहीं है, सामर्थ्य नहीं है। यह भारतीय संस्कृति, जिसके पास शक्ति हो उसकी सब भक्ति करते हैं। जिसके पास शक्ति नहीं है उसकी भक्ति करने वाले कम हो जाते हैं। तुम्हारे पास शक्ति नहीं है सत्य का अनुशीलन करने के लिए। यह राम जिसने मुझे आघात किया यह मेरा श्रेष्ठ शिष्य है। राम! मेरा फरसा तुम्हें देता हूँ। आज से तेरा नाम परशुराम बनेगा। भगवान शिवजी के सिर में जो परसों का आघात लगा था इसलिए शिवजी का एक नाम हो गया खंड परशु।

परशुराम जी ने धरती से 21 बार क्षत्रियों का नाश किया। आप बोलेंगे क्षात्रवृत्ति क्या है? क्षात्र वृत्ति रजोगुण है। सत्वगुण की कमी हो और रजोगुण की वृद्धि हो जाती है तो संसार में विकृति पैदा हो जाती है। आजकल संसार में ज्यादा से ज्यादा लोगों में रजोगुण है। यह विषय वासना भी सब रजोगुण है। आप कहेंगे रजोगुण में प्रवृती है, रजोगुण में काम है, झगड़ा ज्यादा होता है। आज मदनलाल भाई ने बोला था कि राजतंत्र में विकृतियां है। आप सोच लीजिए 100-200 साल पहले राजतंत्र था। राजतंत्र में विकृतियों के कारण हजारों सालों से चला आ रहा देश भी परतंत्र हो गया। राजतंत्र में विकृति के कारण राजा लोग जनता का शोषण करने लग गए। राजतंत्र स्वस्थ हो, राजतंत्र शुद्ध हो इसके लिए प्रजा का शोषण ना हो वही तो चाहिए। अब लोकतंत्र आया तो लोकतंत्र में भी बहुत विकृतियाँ हैं।

तो परशुराम जी ने 21 बार धरती से क्षत्रियों का विनाश करके उनका जो रक्त था वह लाकर यहाँ पांच तालाबों में डाल दिया था। वो ही समंत पंचक है। समंत पंचक, कुरुक्षेत्र का एक प्राचीन नाम है।

इन तालाबों को बाद में पवित्र जलाशयों में बदल दिया गया और कुरुक्षेत्र को इन पाँच पवित्र जलाशयों के कारण समंतपंचक कहा जाने लगा।

अब साधना की ओर आ जाइए। कल्याण के लिये हम सब सत्वगुणी बनेंगे। सत्वगुणी बनने के लिए सबसे पहले तमोगुण को मारना होगा। तमोगुण का लक्षण क्या है निद्रा, प्रमाद, भय, क्रोध, अज्ञान, आलस्य। इन पर विजय पाने से तमोगुण जाता है। ये लक्षण मनुष्य में कम से कम होने चाहिए। जितनी आवश्यकता हो उतना ही होना चाहिए और आलस्य तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए। आज नहीं कल करेंगे कल नहीं परसों करेंगे यह आदत क्या है? यह तमोगुण है। संत कबीरदास जी ने कहा था- काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

तामसिक गुणों को छोड़ना साधक का पहला लक्ष्य होता है। तामसी गुणों को छोड़ने के लिए राजसी गुणों की थोड़ी जरूरत है। परन्तु राजसी वृत्ति प्रबल हो तो दूसरों की सम्पत्ति छीन लो, यह करो, वो करो, इसमें उलझ जाते हैं। इसलिए राजसी वृत्ति को भी संयत करो। देखो 21 बार क्षत्रियों का विनाश किया, उनके रक्त को पंच समंत में डाल दिए। यह एक नाम हुआ।

अब देखते हैं कुरुक्षेत्र नाम कैसे हुआ? भारत में एक महान राजा हुए जिनका नाम था कुरु। उन्होंने वहाँ यज्ञ किए थे, तपस्या की थी, साधना की और अपने हाथों से वहाँ बेलों से कई बार खेती की थी। इसी से उस क्षेत्र का नाम कुरुक्षेत्र हो गया। वेदों का मंत्र है अविमुक्तेव कुरुक्षेत्रः। कुरुक्षेत्र का स्थान मुक्ति प्रदान करने वाला है।

अब शरीर पर आ जाइये। यह शरीर मुक्ति देने वाला है। यह शरीर भक्ति पैदा करने वाला है। यह शरीर शक्ति से अपना और राष्ट्र का कल्याण करने वाला है। परोपकार पर एक संस्कृत का श्लोक याद आ गया:

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

इसका अर्थ हैः वृक्ष परोपकार के लिए फलते हैं। नदियाँ परोपकार के लिये बहती हैं, गायें परोपकार के लिये दूध देती हैं, उसी प्रकार यह मनुष्य शरीर भी परोपकार के लिये है। मनुष्य को भी दूसरों की भलाई के लिए काम करना चाहिए।

यह कहावत बताती है कि प्रकृति में हर चीज दूसरों के लिए काम करती है और मनुष्य को भी इसी भावना को अपनाना चाहिए। वृक्ष फल देते हैं, जिससे दूसरों को पोषण मिलता है। नदियाँ बहती हैं, जिससे जीवों को पानी मिलता है। गायें दूध देती हैं, जिससे दूसरों को पोषण मिलता है। इसी प्रकार, मनुष्य को भी दूसरों की मदद करनी चाहिए और उनके सुख-दुख में साथ देना चाहिए।

महानदी एक प्राचीन नदी है। इसके उद्गम स्थल पर ऋषियों की तपोस्थली है। महानदी के उद्गम स्थल पर कई बार हम गए हैं। वहाँ हम ध्यान करके भगवान का स्मरण करके आए हैं। वहाँ पर बसों से लोग दर्शन करने के लिए आते हैं। भारत में नदी को नदी नहीं बोलते हैं मां बोलते हैं। पहले हम विदेश जाते थे तो लोग हमको कहते थे चाय पी लो, यह दूध पी लो, यह फल खा लो तो हम कहते नहीं नहीं। तो वे पूछते कि फिर आप क्या लेंगे? तो हम कहते धरती माँ का दूध लेंगे। तो वे बोलने कि धरती माँ का दूध क्या है?

हमारे वैदिक परंपरा में धरती, धरती नहीं है माँ है। माँ के जैसे स्तन होते हैं ऐसे पर्वत हैं ये धरती माँ के स्तन हैं। पहाड़ से जो पानी निकलता है वह धरती का दूध हुआ। क्या हो गया है अब? हम ट्रेन में आते हुए देखते हैं कि चारों तरफ धरती सूखी सूखी दिखती है, कहीं पानी नहीं। पहले ऐसे नहीं था। हमारे मन में विकृति, जीवन में भी विकृति, हमारे शासन धारा में विकृति, हमारी योजना में विकृति।

हम अगर चाहेंगे तो भारत सुजलाम सफलाम (पानी और फलों से भरपूर) नहीं बनेगा क्या? असंभव कुछ भी नहीं है। सब संभव है। हम जितने अध्यात्मवादी है, उतने ही विश्वासी भी हैं। हमको तो पूर्ण विश्वास है यह सब बदल जाएगा। भारत जैसा पूर्व में था प्राचीन भारत वैसा फिर बन जाएगा। यह हमारा पूर्ण विश्वास है। मुझे तो पूर्ण विश्वास है अखंड भारत होगा। मुझे तो पूर्ण विश्वास है भारत फिर से विश्व गुरु होगा। मुझे तो पूर्ण विश्वास है वैदिक परंपरा का पुनर्जागरण होगा। लेकिन यह केवल प्रवचन से नहीं होगा। प्रवचन तो विचार पैदा करता है। विचार क्रांति के साथ-साथ में आचार क्रांति होनी चाहिये। आचरण क्रांति के साथ-साथ प्रचार क्रांति हो। हमारा व्यक्तिगत विचार शुद्ध हो।

देखिए 7 वर्ष पहले हमारे विचार में गाय मतलब गाय। देशी हो या विदेशी, गाय तो गाय होती है। आदमी भारतीय हो या विदेशी आदमी तो आदमी होता है। परिवेश, परिस्थितियों आदि में कुछ विकृतियाँ आई। 2012 में मेरे विचारों में क्रांति आई। गाय हो तो वेदलक्षणा गाय। जिसके कुकुद हो, गलकम्बल हो वो गाय। भैंस दूध देती है, भैंस गाय नहीं है। ऐसे ही हर दूध देने वाले पशु को हम गाय नहीं बोल सकते। तो वह विचार क्रांति जब मेरे मन में आई तो शोध किया, संबंधित शास्त्र पढ़ने लगा। विदेशी वैज्ञानिकों के ग्रंथ भी पढ़ने लगा। वे भी बोलते हैं कि भारतीय देसी गाय का दूध, गोमूत्र, गोबर आदि है वह कीटाणु नाशक है, जीवाणु नाशक है। यह भारत के साधुओं की वाणी नहीं है विदेश में बैठे वैज्ञानिकों की यह बात है कि अन्य पशुओं का दूध है वह नुकसानदायक है, हानिकारक है। आजकल इंटरनेट का जमाना है आप खुद इंटरनेट में सर्च करके देख लीजिए कि भारतीय देसी गाय का दूध ए-2 है और अन्य पशुओं का दूध है वह ए-1 है। दोनों में क्या अंतर है अपने आप आपको पता चल जाएगा। तो विचारों में परिवर्तन की क्रांति चाहिए। पहले विचार क्रांति फिर आचार क्रांति और उसके बाद प्रचार क्रांति। आजकल के जमाने में क्या होता है जोर से माइक्रोफोन लगा करके प्रचार करते हैं लेकिन आचरण शुद्ध नहीं हो तो उसका प्रभाव नहीं पड़ता है।

आजाइए अब इस शरीर पर। यह शरीर कुरुक्षेत्र है। इस शरीर से हम मुक्त हो सकते हैं। इस शरीर से हम आत्म विकास करने में समर्थ हो सकते हैं साथ ही साथ हमारे परिवार, राष्ट्र और सृष्टि के मंगल के लिए हम काम कर सकते हैं।

आजाइए अब धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे पर। धृतराष्ट्र संजय से पूछते हैं कि युद्ध के क्षेत्र में पांडु पुत्रों ने और मेरे पुत्रों ने क्या किया। धृतराष्ट्र के मन में यह था कि वह धर्मक्षेत्र है, कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र है तो वहाँ जाकर क्या पता उनकी बुद्धि बदल गई हो और युद्ध नहीं किया हो। देखिए अर्जुन के मन में युद्ध नहीं करूंगा यह विचार आया। साधाक द्वारा साधना करने के लिए अपने जीवन को गुरु के समर्पित कर दिया होता है और इसके आगे भी गुरु को अपने जीवन रूपी रथ का सारथी बना दिया हो और फिर बोले कि मैं साधना नहीं करूंगा, मैं ध्यान नहीं करूंगा। यह साधक का लक्षण नहीं है। तो अच्छे डॉक्टर होते हैं वे केवल दवाई की पर्ची नहीं लिखते हैं, वे यह भी देखते हैं कि मरीज दवाई खा रहा है कि नहीं खा रहा है? दवा के साथ जो पथ्य है वो खाता है कि नहीं? यह सब देखने का जो काम करता है वही अच्छा डॉक्टर है। ऐसे ही अच्छे गुरु भी अपने शिष्य का, अपने शरणागत का पूरा ध्यान रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण श्रेष्ठतम गुरु हैं। वे, अर्जुन क्या कर रहे हैं उसका और उनके मन में क्या है, उसका भी पूरा ध्यान रखते हैं, बल्कि केवल ध्यान ही नहीं रखते हैं, उसका उचित हल भी करते हैं। महाभारत का युद्ध होने से पहले ....शेष अगले

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

इसलिए हमारे जितने सूरमा, जितने मनीषी, जितने अध्यवसायी महापुरुष हुए उनके जीवन की जब हम चर्चा करें तो पूरी चर्चा रखने में आपको भी संकोच होगा और हमारी वाणी भी मौन हो जाएगी। बाबा तुलसीजी के जीवन पर पूरा-पूरा प्रकाश न डालते हुए किंचित छवि हम सामने लावें।

भक्तों! बाबा तुलसी के पावन चरित्र को मानसकार कहते हैं। तुलसी जी के दिव्य चरित्र का वर्णन अपने मुख से कभी नहीं हुआ। महापुरुष अपना नाम भी छुपाना चाहते हैं तो कीर्ति क्यों गायेंगे? उन्होंने खुद ही मना किया है कई जगहों पर सुजस ना गान करें, तो आप क्यों गाते हैं? पर हमारे खोजी संतो ने, सत्पुरुषों ने तुलसी जीवन को खोजा। सुना है मानस के भी पूर्व पृष्ठों में वर्णित परिचय के क्रम में है।

राजापुर उत्तर प्रदेश में है बस्ती एक छोटी-मोटी, जमुना जी के किनारे वह गांव बसा हुआ है। आत्माराम दुबे पिता और हुलसी देवी माता। सरयू पारण इन दिव्य दंपति के घर में बाबा तुलसी हमारे अवतरित हुए। अवतार की लीला बड़ी अद्भुत है। 12 महीने में आए, 9 माह में प्रकट नहीं हुए। 12 महीने में आने के बाद भी उनकी उस समय की जो झांकी थी, स्वरूप था वो 5 वर्ष के बच्चे जैसा था। डीलडोल 9 महीने या 12 महीने के बच्चे जैसा नहीं था बल्कि 5 वर्षीय बालक जैसा और उनकी सारी दन्तावलियाँ प्रकट थी, दांत बाहर नहीं आये, गर्व से प्रकट हुए। इतना ही नहीं इस जगत में जो भी आया वो रोया रोया रोया है, पर एक तुलसी बाबा आए राम राम राम राम का उच्चारण करते हुए इस धरा पर प्रकट हुए हमारे प्रिय संत। इसलिए उनका नाम राम बोला रखा गया। पर दैवत्यों के विचार से वह काल बहुत बढ़िया नहीं था जिसमें हमारे भगवान संत तुलसी पधारे, अभक्त मूलकाल था, गंड मूलकाल। मूलकाल भी अलग-अलग होते हैं- एक अभक्त मूलकाल होता है जो निश्चित रूप से दुर्घटना को देने वाला, दु:ख को देने वाला होता है। ऐसी अमंगल की भावना से माता-पिता संतान का मुख नहीं देखते हैं, त्याग कर देते हैं। ऐसी स्थिति बाबा तुलसी की रही।

तो जन्मजात अनादर का शुभारंभ हो गया। देवयोग से माता हुलसी ने देह का त्याग कर दिया और देखो वे महापुरुष कैसे पलते हैं? अनाथ तो हो ही गये। पिताजी हैं पर पुरुष के द्वारा बच्चों का लालन पालन नहीं होता उनके खर्च जुटाये जा सकते हैं, कमाई करके लाया जा सकता है, पर पोषण देने का काम तो माँ ही करती है। माँ तो चली गई। एक दासी थी चुनिया, चुनिया तुलसी को अपने ससुराल ले गई। वहाँ उनकी सेवा करने लगी। बालक तुलसी पल नहीं पाए थे, अभी पालने के ही लायक थे तो चुनिया भी चली छोड़ कर दुनिया। वह दासी भी अनाथ कर गई। राम का बेटा रामलाल, राम प्यारे, राम के दुलारे हमारे तुलसी अनाथ हो गए। इस अनाथ बालक की अब संभाल कौन करे?

धन्य है माँ अन्नपूर्णा, जिन बाबा विश्वनाथ की पावन कृपा का जो प्रसाद बाबा तुलसी को मिला। जिनको धरोहर सौंपना होता है उनकी रखरखाव की जाती है। हमारे चाणक्यादि शास्त्रों में राजपुत्र रक्षणम् की बात है। जिस पीढ़ी को अपना भार उतार कर देना है उनके रखरखाव का विचार रहे। उनके लालन पालन की ओर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि आपके वृतियों के अनुकूल उनकी विचारधारा हो जाए। रखवाली पहले नहीं की गई और कंधे पर दायित्व दिया गया तो वह आगे बढ़ नहीं पायेगा, रास्ता छोड़ देगा। पहले उसकी रखवाली करो, जब

योग्य हो जाय तब उसके कंधे पर जिम्मेदारी दी जाय। भगवान सदाशिव तुलसी के कंधे पर राम गाथा सौंपने वाले थे तो रामचरित्र की पावन गाथा जिनके माध्यम से करने वाले थे, जिनके मुख से गाने गवाने का संकल्प हो रहा था उसकी रखवाली आवश्यक हो गई न। उस अनाथ बालक की रक्षा माता अन्नपूर्णा ने की। एक जर-जर वृद्धा का रूप बना लिया करती थी। लंगोटी, लाठी और कटोरा में पकवान, मिष्ठान, भोजन की सामग्री लेकर, वृद्धावस्था झुरियों, श्वेत बाल, वह उस लाठी के सहारे बालक तुलसी को ढूंढ लिया करती थी और वह अनाथ बेटा जहाँ भी मिलता वहीं उसे भोजन करवा देती थी। मैया अन्नपूर्णा के द्वारा वर्षो तक हमारे तुलसी की सेवा हुई। त्रिकाल अन्न की व्यवस्था माँ अन्नपूर्णा करती रही। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय।

सज्जनों अब काशी क्षेत्र में आ रहे हैं। जनेऊ संस्कार पूर्ण कराया गया और हमारे यहाँ वैष्णवों के पंच संस्कार है। ब्राह्मण बालक को संतों के आश्रम में छोड़ा जाता है तो त्रिपदा गायत्री उपदेश पूर्वक पांच संस्कार पूर्वक उन्हें तारक मंत्र भी सुना दिए जाते हैं, वैष्णवता की उसे सिद्धि करवा दी जाती है। जनेऊ संस्कार बालक तुलसी का हुआ पर गायत्री मंत्र उस समय आचार्य को बोलना न पड़ा, तुलसी के मुख से प्रकट हो गया। आज की परमपरा के बोलें तो आश्चर्य नहीं होगा क्योंकि घर-घर कैसेट में सुनकर बच्चे याद कर लेते हैं, स्कूल के टीचर भी पढ़ा देते पर तुलसी कालीन व्यवस्था में गायत्री मंत्र को कभी इस प्रकार माइक पर उच्चारण नहीं किया जाता था और चूंकि गायत्री मंत्र मनन के लिए कहा गया है, उसका उच्चारण नहीं हो सकता, वह वाचिक नहीं हो सकता। गायत्री मंत्र का वाचन नहीं हो सकता, यह मनन करने योग्य है, जो उपदेश विधि से प्रदान किया जाता है। यह मंत्र आचार्य विधि से ही प्राप्त होता है। गायत्री मंत्र प्राप्त हुआ बाबा तुलसी ने उस मंत्र को गाया और साथ ही तारक मंत्र दिए। वैष्णवता प्रदान की गई।

सज्जनों! समय बिता और योवनकाल आने पर भारद्वाज गोत्री रत्नावली से इनका विवाह संस्कार होता है। वैवाहिक जीवन में बाबा तुलसी सुखी जीवन जी रहे थे। भगवान श्री रघुनाथ जी को बहुत आतुरता थी। उन्हें जल्दी गृहस्थ से पूर्ण साधु बनाना था, पूर्ण विरक्त बनाना था तो भोग मार्गो से उच्चाटन हो जाए इसके लिए काम की दिव्य ज्वाला प्रकट कर दी। एक दिन रत्नावली के भैया आए अपनी बहन को पीहर ले गए जब तुलसी बाबा कहीं गाँव गए हुए थे। लौट कर आए तो कुटिया खाली है, घर खाली है, रत्ना नहीं है। इस चिंता में महात्मा आज अतिरेक से हो रहे थे और रत्ना की खोज में जमुना की उच्च तरंगों वाले उस उच्च स्तर वाले जल का जो प्रवाह चल रहा था उसका विचार ना करते हुए आज अपनी रत्नावली का स्मरण करते-करते ससुराल पहुँचे।

अर्धरात्रि काल है, जब उस घर में प्रवेश किया तब अंग वस्त्र भीगे हुए थे, पानी के छींटे पड़े, रत्ना की आंखें खुली और जब देखा तो चौंक गई एक बार कि यहाँ तो हमारे स्वामी के आने का कोई कहीं से समाचार नहीं था, कहीं से कोई संभावना नहीं दिखती, पर है तो वही तो उनके मुख से यह दोहा निकला-

अस्थि चर्ममय देह यह यामे ऐसी प्रीति।
जो होती रघुनाथ में, होती न तो भव भीति।।

स्वामी! हाड़ मांस की मानव काया, यह शरीर विकारों का घर है। अंग अंग में विषय और वासना, मेल मेलिंदा, दुर्गंध फंसा हुआ है। नहीं जानते तब तक ठीक है, जानना शुरू हो जाएगा तब तो बात समझ में आ जाए कि हम कहाँ है। इसलिए इस जीवन की जो न्यूनता है उसका तो हमें ज्ञान ही नहीं हुआ। जो नहीं हुआ वह भी अच्छा है, जी रहे हैं आराम से। जिस दिन अच्छे से ज्ञान हो जाएगा तो

अपने आप में घृणा होने लगेगी। बाबा तुलसी के जीवन में यह बदलाव एक वाक्य में हो गया। यदि श्रीरामजी के चरणों में ऐसी ही प्रीति होती तो फिर संसार का भय नहीं होता। बाबा तुलसी ने केवल इतना कहा कि देवी तुम्हारे वचन सत्य है और मौन धारण कर लिया जो लम्बे समय तक चला और पुनः काशी में आए वहाँ उन्होंने भगवान विश्वनाथ की उपासना की। वर्षो की उपासना में जब भगवान शिव प्रसन्न नहीं हुए तो थोड़ी खिन्नता हुई।

श्रोता होना बहुत कठिन बात है। वक्ता होकर आसन पर बैठकर तो कोई बोल सकता है लेकिन श्रोता होकर सुनना अनंत गुना शक्ति का कार्य है। मंच पर घंटों बोला जा सकता है पर बात तो है कि आगे धैर्यपूर्वक बैठकर कुछ सुन सके, धीरज तो श्रोता की है। बाबा तुलसी उतने ही अच्छे श्रोता भी थे। नित्य कथा सुनने जाते थे। बाबा तुलसी चरित्र को सुनकर के लगेगा कि धाम नाम की कैसी निष्ठा होनी चाहिए। अभी-अभी हम काशी जी में जब उस स्थान में दर्शन करने गये थे तो पुराने कुछ संत लोग चर्चा कर रहे थे कि देखिए यह बाबा तुलसी की कुटिया है। तुलसी बाबा की धामनिष्ठा कैसी थी कि काशी नगरी में बाबा ने कभी लघु शंका नहीं किया। हम लोग अटेच सुविधा की कामना रखते हैं, जहाँ जुगाड़ नहीं होता उस घर में रहना नहीं चाहतें हैं। उपासना, सेवा की भावना बलवती है पर सुविधा की इच्छा भी साथ -साथ जुड़ी हुई है। लेकिन वे बाबा कैसे थे तुलसी जिन्होंने काशीवास लंबे समय तक किया, 126 साल की आयु पूरी की था बाबा तुलसी ने। 1554 का अवतरण और 1680 का विश्राम। इतने लंबे आयुकाल में बाबा ने किस प्रकार की संभाल रखी काशी नगरी में रहते हुए। लघु शंका जैसे शरीर धर्म का पालन काशी में ना करके एक नौका पर चढ़ जाते थे गंगा के उस पार मिलों दूर यह सब करके लौट के आते थे। यह काशी के प्रति धाम निष्ठा है उनकी। यह जीवन की पवित्रता है संतों की हरि भक्तों। साढ़े 500 साल पुराने काठ की नौका का एक टुकड़ा रखा है संतों ने। उसे पूजा घर में रखा है और आज भी विद्यमान है। कोई जाते हैं तो उस काष्ठ के दर्शन करके कहते हैं कि इसी नाव पर बैठ करके तुलसी शोच क्रिया करने गंगा के उस पार जाया करते थे।

सज्जनों इशारा वहाँ है की शौच क्रम में लोटा लेकर लोग जाते थे। शौच में लोटे का बचा हुआ जल किसी बेरी के झाड़ी में बाबा तुलसी डाल दिया करते थे, उस झाड़ी के मूल में कोई जीवात्मा प्रेत के रूप में निवास करता था। आप जानते होंगे कि प्रेतों को पवित्र जल कभी भाग्य में नहीं लिखा है। जिनकी योनि निंदित हो गई, मनुष्येत्तर आदि योनि में भी जिन्हें स्थान ना मिला ऐसे हमारे पितर भी है उनको पवित्र जल नहीं मिलेगा। थाली में परोसा अन्न भी नहीं मिलेगा और दिया गया पिंड भी उन्हें नहीं मिलता है। अब तर्पण कभी करते होंगे तो ध्यान दिया होगा हम अपने पूर्वजों को जल प्रदान करते हैं पर अंतिम बात बोलते हैं- हमारे कुल के वो लोग जो अपुत्री रह गये हों, अपिण्डी रह गये हों, जिनके लिये श्राद्ध नहीं किया गया हो जिनकी गति न हुई हो, देव पितर समेत किसी उत्तम कोटि के योनियों को नहीं प्राप्त किया हो, ऐसे मलिन प्रेतादि योनियों में जो हमारे ही पूर्वज हैं उनके लिए मैं वस्त्र का निचोड़ा हुआ जल दे रहा हूँ उन्हें प्राप्त हो।

बाबा तुलसी के शौच से बचे हुए जल को जब उस बेरी में बैठे प्रेतात्मा ने रोज पिया तो उसके मन में कृतज्ञता जगी कि जो साधु हमें रोज पानी पिलाते हैं इन्हें कुछ दे दूँ तो अच्छा होगा। तो आज प्रेत ने प्रकट होकर बाबा तुलसी से निवेदन किया कि महाराज कुछ मांग लो। बाबा ने कहा आप है कौन? वो बोला मैं प्रेत हूँ। कहा, भला प्रेत से क्या मांगा जाए कि उपासना तो हम सीताराम जी की कर रहे हैं, प्रेतों से कोई अपेक्षा नहीं।.........शेष अगले अंक में

शिव महापुराण कथा

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

परम कृपालु, परम दयालु, भगवान उमा महेश्वरनाथ, ठाकुर श्री गोवर्धननाथ, श्री पंढरीनाथ, श्री अयोध्यानाथ, श्री रंगनाथ, श्री द्वारिकानाथ, श्री जगन्नाथ महाप्रभु, भगवान विश्वनाथ, केदारनाथ, बैद्यनाथ, सकल भुवनेश्वर परात्पर अखिलेश्वर भगवान उमा महेश्वर शंभूनाथ के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करते हुए, जगत जननी पूज्या गोमाता के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करते हुए, सभी संत, हरीभक्त, वैष्णव, शिवभक्त सभी आचार्यो को दंडवत प्रणाम करते हुए, वेद मंदिर की संपूर्ण संत परंपरा परम पूज्य वेदमूर्ति श्री गुरु गंगेश्वर आनंद जी महाराज के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करते हुए, यहाँ विराजमान समस्त पूज्य संतों के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करते हुए, सभी भू देवताओं के श्री चरणों में दंडवत प्रणाम करते हुए, आप सभी गोभक्त, हरिभक्त, शिवभक्त, राष्ट्रभक्त, बंधु, बहनों, मातृशक्ति को खूब-खूब दंडवत प्रणाम।

एक पिता होता है ना, वह अपने पुत्र को प्रसिद्ध करने के लिए, प्रतिष्ठित करने के लिए नए-नए व्यवसाय खोलता है, कभी अमुक व्यवसाय में अपने पुत्र को लगाता है, कभी अमुक व्यवसाय में अपने पुत्र को लगाता है। उसकी इच्छा रहती है कि कैसे भी करके मेरा पुत्र प्रतिष्ठित हो जाए। जैसे पिता अपने पुत्र को प्रतिष्ठित करने के लिए नए-नए व्यापारिक प्रयोग करता है ऐसे ही ये आप सब मेरे प्रियजन, हमारे गोभक्त, हरिभक्त, आप सब मुझे भी अलग-अलग कथाओं में प्रतिष्ठित करने के लिए हर साल ऐसे आयोजन करते हैं। एक पिता का पुत्र के लिए जैसा प्यार होता है वैसा प्यार आप लोगों का मेरे लिए है यह मैंने अनुभव किया, नहीं तो इतनी तैयारी कौन करता है? यह कहकर मैं अन्य महाराज लोगों को थोड़ा बुरा लगा दूंगा, पर आप लोग इतनी कथाएं कराते हो, मेरे लिए जितनी तैयारी करते हो उतनी कोई महाराज के लिए नहीं करते हो और जो प्रेम, जो छांव आप मेरे लिए दिखाते हैं मैं उसके लिए आपका हमेशा ऋणी और कथा से पहले ही दक्षिणा दे देते हो। अन्य कथाओं में तो अथवा किसी भी अनुष्ठान में अनुष्ठान के उपरांत दक्षिणा दी जाती है यद्यपि ध्यान से सुनिएगा शास्त्र का विधान तो ऐसा है कि कार्य से पहले दक्षिणा दे दी जाए क्यों? क्योंकि कोई भरोसा नहीं है कि कार्य पूरा होने के बाद वह ब्राह्मण रूकेगा कि नहीं रुकेगा, कार्य पूरा होने के बाद हमारे निश्चितता हो जाती कि भाई यह काम पूरा हो गया तो हम दूसरे काम में लग जाएं और थोड़ी देर हो जाए और तब तक वहाँ विद्वान ब्राह्मण रुक ना सके और दक्षिणा के बिना तो यज्ञ अधूरा माना जाता है। इसलिये पहले ही पंडितजी को, ब्राह्मण देवता को दक्षिणा दे दें। वैदिक काल तो ऐसा ही था।

आप लोग बुरा नहीं मानिएगा, बहुत सी जगह शादी विवाह होते हैं तो पाणि ग्रहण संस्कार हो जाए तो उसके बाद फोटो खींचने में लोग लग जाते हैं। पंडितजी को दक्षिणा देना याद ही नहीं आता। पंडितजी अपने मुंह से तो कैसे कहें कि भाई ब्याह हो गया हमें भी दक्षिणा दे दो। अगर फिर कोई याद भी दिलाएं कि अभी तक पंडित जी खड़े हैं, तो कहेंगे बस 10 मिनट पंडितजी, एक 15 मिनट पंडितजी। यह तो महानता है उन पंडितजी की कि वह आपकी दक्षिणा के लिए, आपके उस पाणिग्रहण संस्कार की पूर्णता के लिए प्रतीक्षा करता है नहीं तो ब्राह्मण क्यों प्रतीक्षा करें? क्योंकि यज्ञ के उपरांत अपने यजमान ने जो दिया है ब्राह्मण को वह ब्राह्मण के लिए फल नहीं है, उसके मंत्रोच्चार से देवता प्रसन्न हुए, प्रकट हुए वह ब्राह्मण के लिए फल है। यज्ञ से यजमान का फल होता है तो ब्राह्मण का भी तो कोई फल होता

होगा। उसका फल यह है कि उसके मंत्रोच्चार से देवता प्रकट हो गये यह फल है ब्राह्मण के लिये। क्योंकि मंत्र है देवताओं को बुलाने के लिए तो आप सब लोग मानो उसी पौराणिक काल की परिपाटी को निभाते हैं। हर वर्ष ही लगभग ऐसा देखने को मिलता है कि कथा से पहले ही आप लोगों के द्वारा सैकड़ों गाड़ियाँ चारा हमारे गोधाम को समर्पित कर दिया जाता है, सैकड़ों गाड़ी चारा।

कुछ जगहों पर तो लोग जाकर कमरे में कहते हैं कि महाराज थोड़ा हमारा बोल देना, थोड़ा हमारा बोल देना स्वयं अपनी प्रशंसा के लिए प्रेरित करते हैं कि महाराज थोड़ा हमारा बोल देना, थोड़ा हमारा बोल देना और मैं थोड़ा अकड़ूँ हूँ, कहने पर तो बिल्कुल नहीं बोलता। लेकिन फिर भी लोग अपनी ओर से आकर बोलते हैं। लेकिन आप लोगों के कार्य ऐसे हैं कि आप लोग आकर के नहीं बोलते हैं कि हमारे लिए बोलिए हमारे ठाकुर जी हमें प्रेरित करते हैं कि उनके लिए बोलिए। विशुद्ध सेवा आप लोगों की है।

अभी वर्तमान में कुछ समय पहले इसी शहर अहमदाबाद में विमान दुर्घटना हुई थी। उस समय भी यहाँ की जो हमारी अग्रवाल सेवा समिति है इसने अद्भुत कार्य किया। मोबाइल पर ही देख-देख कर मन भर आता था। बिना कोई भेदभाव के पीड़ितों की सेवा की। नहीं तो लोग, बुरा न माने कोई भी समाज के नाम पर जो समिति होती है वह सिर्फ अपने समाज की ही सेवा करती है, लेकिन इस समिति ने नाम तो अपने समाज का रखा और सेवा पूरे राष्ट्र की करी, पूरे राष्ट्र की सेवा करी। मुझे इससे बहुत प्रसन्नता हुई। फोन पर तो मैं क्या अभिनंदन कर सकता था और मेरे पास में अभिनंदन करने के लिए शब्दों के अलावा कुछ है भी नहीं, इसलिए आज इस व्यास पीठ से, इस शिव पीठ से, इस नन्दी पीठ से, इस नारद पीठ से मैं आप सभी समिति बंधुओं का खूब-खूब अभिनंदन करता हूं और आप सबको इस बात के लिए साधुवाद देता हूं कि आप सब ने बीते वर्षो में अपने सेवा कार्यो से यह साबित कर दिया कि आप सिर्फ हरिभक्त नहीं हैं, आप परम गोभक्त भी हैं और राष्ट्रभक्त भी हैं। इस बात के लिए मैं अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ। मेरे लिए आप लोगों का प्रेम बहुत अनमोल है, बहुत बड़ा धन है। प्रतिवर्ष आप मुझे अवसर देते हैं।

हर वर्ष जनवरी माह में कथा हो जाया करती है। इस बार जनवरी माह में मैं समय नहीं निकाल सका। मैंने तो प्रस्ताव दिया भी था कि और कोई महाराज से करवा लो, हालांकि यह प्रस्ताव दिया इसीलिए था मैंने क्योंकि मुझे पता था कि आप लोग और किसी से कराएंगे नहीं। कभी-कभी पति-पत्नी में झगड़ा होता है तो पति कोई काम पत्नी को कहता है कि तुमको यह करना है, यह करना है। पत्नी कहती है मेरे पास अभी टाइम नहीं है। पति कहता है यह तो करना पड़ेगा तो पत्नी कहती इतना ही जरूरी है तो जाओ और किसी से करवा लो। यह बात पत्नी कहती है कि जााओ और किसी से करवा लो, लेकिन उसको पता होता है कि ये मेरे अलावा और किसी से करवा नहीं सकते।

तो यह मुझे भी पता था इस वर्ष जनवरी में मैं समय नहीं निकाल पाया तो आगे जो समय रिक्त था वह सोचा गया कथा के लिए तो यही समय प्राप्त हुआ। जब यह समय देखा तो समझ में आया कि यह तो श्रावण मास है तब हमारे साथियों ने कहा कि जब श्रावण मास है तो श्रावण में तो हर हर महादेव गूंजना चाहिए। शिव कथा गूंजनी चाहिए, भोलेनाथ की चर्चा होनी चाहिए और मैं तो निरंतर शिव कथा कहता भी नहीं हूं। भागवत कथा, भक्त कथा, कुंवर बाई का मायरा कहता हूँ। यही अपना तो हाल है, पर आप लोगों की प्रेरणा से भगवान शिव की कृपा से अपनी वाणी पवित्र करने के लिए इस पवित्र श्रावण मास में शिव कथा शिव महापुराण के माध्यम से हम लोग हरिहर करेंगे। इतना भक्त तो नहीं हूँ लेकिन नाम

तो भक्त लगा ही रखा है। अगर कोई पुलिस अधिकारी ईमानदारी से कार्य अपना करें या ना करें किंतु कहलाता तो पुलिस अधिकारी ही। तो हम भी प्रमाणिकता से भक्ति करें या ना करें पर कहलाते तो कृष्ण भक्त है, ठाकुर जी के भक्त तो कहलाते हैं। तो आप में से अनेक लोगों के मन में यह भी कोतूहल होगा कि निरंतर कन्हैया का गुण गाने वाले, कृष्ण भगवान की कथा कहने वाले ये शिवजी की कथा कहेंगे कैसे? वह भी 7 दिन, एक दिन दो दिन कहना हो तो भी कह लें, पर 7 दिन का समय निकालना?

कृपानाथ हरिहर में बहुत एक्यता है। यानि भगवान शिव में और श्री हरि में बहुत एक्यता है। हम अपनी उपासना के चलते कभी-कभी ऐसे बोल जाते हैं कि नहीं हम तो शिवजी को नहीं मानते हम तो अमुख को नहीं मानते, हम तो उनको नहीं मानते। अरे भाई जिनको आप नहीं मानते हैं, उनको आपके प्रमाण की जरूरत है क्या? लेकिन हम जिनको नहीं मानते हैं जिनको हम मानते हैं वह उनको मानते हैं। सोचिए हम रामजी को मानते हैं हम शिवजी को नहीं मानते हैं पर रामजी शिवजी को मानते हैं। इसलिए भैया मैंने तो अपने मन में हरिहर में कोई भेद रखा नहीं। ठीक है मुझे मेरे गुरुजनों से जो पद्धति मिली है इस भक्ति मार्ग में आगे बढ़ने की उसके सहारे चल रहा हूँ, पर मन में किसी के लिए भेद नहीं है। शिव के प्रति मेरे मन में कोई अनादर नहीं है।

शिवजी का महात्म्य अलौकिक है। अभी मैं आपको सुनाऊंगा। सुनाऊंगा ही आगे आने वाले दिनों में। सुन-सुन करके आप सबके हृदय ऐसे भर जाएंगे मुझे विश्वास है। शिव संभालने वाले देवता हैं, संभालने वाले देवता। कई माताएं संतति को जन्म तो देती हैं पर संभाल नहीं पाती। कोई माताएं बहनें बुरा न माने पर बताएं मैं सही बोल रहा हूं कि नहीं? बोलिए ना! व्रत होगा श्रवण का। ठीक कहा कि नहीं? भाई जन्म दे देती है लेकिन चाहे स्वास्थ्य की समस्या हो चाहे आजकल और भी जॉब है किसी के काम है और किसी की अपनी मन स्थिति ऐसी है कि बस अब मेरे से नहीं होता। मैंने जन्म दे दिया और हम क्या करें, पर जो संभालती है वह संभालने में माँ से भी आगे बढ़ जाती है। यह भी ठीक कहा कि नहीं? बस इसी प्रकार मेरे भाई बहन हमें उपासना कोई भी मिली हो, सुनिएगा इसे कृपया। हमें उपासना कोई भी मिली हो, हमें संप्रदाय कोई भी मिला हो, हमें गुरु-आचार्य कोई भी मिला हो, हमें मंत्र कोई भी मिला हो, पर संभालने वाली माँ शंकर भगवान ही हैं। इसलिए संभालने वाले भगवान शिवजी हैं।

यह जो वर्णन हम लोग सुन लेते हैं या कुछ फोटो देख लेते हैं कि शिवजी बोले तो भांग पीने वाले हैं, कोई नशा करने वाले हैं, कई लोग तो शिवजी का ऐसा फोटो भी बना लेते हैं जिसमें शिवजी चिलम पीते हैं और ऐसे धुंआ निकलता है। लेकिन यह चूक है। शंकर भगवान का ऐसा स्वरूप नहीं है।

व्यक्ति के जीवन में एक रस प्रतिष्ठित हो जाता है ना फिर वह और कहीं नहीं भटकता, फिर वह उसी के पीछे लगता है। जैसे किसी को तंबाकू में रस मिलता है, कोई तंबाकू पाने वाले यहाँ बैठे होंगे बुरा तो मानेंगे ही नहीं क्योंकि बुरा मानते तो अब तक छूट जाता, लेकिन कोई बात नहीं अब तंबाकू वाले को तंबाकू में रस आता है। अब उसको आप लता मंगेशकर जी को बुलाकर गवा दो उसके सामने और 3 घंटे तक कि लता मंगेशकर जी सिर्फ आपके लिए गाएंगे पर 3 घंटे आपको तंबाकू नहीं मिलेगा तो वह कहेगा लता मंगेशकर जी को घर भेजो, मुझे तो तंबाकू चाहिये। ठीक मुझे उसमें जो रस आता है वह लता मंगेशकर जी के गायन में मुझे नहीं आता। कई राजाओं को देखा होगा आपने वे नृत्य देखते-देखते भी बीच-बीच में व्यसन करते हैं, अरे भाई जरूरी कहाँ है बीच में यह? नृत्य चल रहा है इतना सुंदर। क्योंकि उनको रस जिसमें आता है उनको उसमें ही आता है तो हमारे भूत भावन शिव जी ......शेष अगले अंक में

गीत

गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी

(तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा........)
अर्बुदा की वादियों में गोतीर्थ बना अति न्यारा,
ये मनोरमा गोलोक है-ये मनोरमा गोलोक हैं,
नवब्रज मंडल कहते इसको लगता है अति प्यारा,
ये मनोरमा गोलोक है-यह मनोरमा गोलोक है ....
नंदगांव में प्रवेश करते गो दर्शन हो जाते, गोदर्शन हो जाते!
आगुन्तकों की आवभगत में सदा ही तत्पर रहते, सदा ही तत्पर रहते!
बड़े प्रेम से गोमाता का प्रसाद सभी है पाते!
ये मनोरमा गोलाक है, ये मनोरमा गोलोक है .... (१)
ग्वाल बाल सब गुरुकुल में वैदिक शिक्षा पाते । वैदिक शिक्षा पाते।
संस्कार संस्कृति और गोसेवा का पाठ पढाते, गोसेवा का पाठ पढ़ाते!
आयुर्वेद और पंचगव्यों से सभी आरोग्य पाते!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं .... (२)
ऋषिकुल आश्रम में बाग बना है मीठे फलागम वाला, मीठे फलागम वाला!
पथमेड़ा गोऋषि जी ने यहाँ प्रथम डेरा डाला, यहाँ प्रथम डेरा डाला!
आम और आंवला होता अनूठे स्वाद वाला!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं .... (३)
बरसाना के सप्तऋषि में संतकुटीर बनाये, संत कुटीर बनाये!
धर्माचार्य की राम चौकी पर मीरा माधव सजाये, मीरा माधव सजाये!
गोमाता के मन्दिर की यह शोभा बरनी न जाये!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं .... (४)
गोकुल में गो सदन बने हैं गो को आश्रय देते, गो का आश्रय देते!
मखमल माटी पर गैया बैठे, गोवत्स उछला करते, गोवत्स उछला करते!
रमणरेती के टीले से गोलोक निहारा करते!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं ....(५)
वृंदावन की हरित धरा पर गोचारण किया जाता,गोचारण किया जाता!
गोआधारित कृषि अन्न एंव गोग्रास उगाया जाता, गोग्रास उगाया जाता!
ताल तलैया पर गोवंश आकर अपनी प्यास बुझाता!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं .... (६)
नंदगांव में भव्य चातुर्मास देखा पहली बार, देखा पहली बार!
संतवाणी का प्रसाद मिला है. हुआ है बेड़ा पार, हुआ है बेड़ा पार!
संतो के दर्शन का अवसर मिले न दुजी बार!
ये मनोरमा गोलोक है, ये मनोरमा गोलोक हैं .... (७)

भज गोविंदम्
(गोविंदकी स्तुति-प्रार्थना)

(श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित)

...........पिछले अंक से आगे

नारीस्तनभरनाभीदेशम्
दृष्ट्वा मागा मोहावेशम्।
एतन्मान्सवसादिविकारम्
मनसि विचिन्तय वारं वारम्। (3)

स्त्री शरीर पर मोहित होकर आसक्त मत हो। अपने मन में निरंतर स्मरण करो कि ये मांस-वसा आदि के विकार के अतिरिक्त कुछ और नहीं हैं।

नलिनीदलगतजलमतितरलम्
तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्
विद्धि व्याध्यभिमानग्रस्तं,
लोक शोकहतं च समस्तम् (4)

जीवन कमल-पत्र पर पड़ी हुई पानी की बूंदों के समान अनिश्चित एवं अल्प (क्षणभंगुर) है। यह समझ लो कि समस्त विश्व रोग, अहंकार और दु:ख में डूबा हुआ है।

यावद्वित्तोपार्जनसक्त:,
तावन्निजपरिवारो रक्त:।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे,
वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे। (5)

जब तक व्यक्ति धनोपार्जन में समर्थ है, तब तक परिवार में सभी उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित करते हैं परन्तु अशक्त हो जाने पर उसे सामान्य बातचीत में भी नहीं पूछा जाता है।

यावत्पवनो निवसति देहे,
तावत् पृच्छति कुशलं गेहे।
गतवति वायौ देहापाये,
भार्या बिभ्यति तस्मिन्काये। (6)

जब तक शरीर में प्राण रहते हैं तब तक ही लोग कुशल पूछते हैं। शरीर से प्राण वायु के निकलते ही पत्नी भी उस शरीर से डरती है।

बालस्तावत् क्रीडासक्त:,
तरुणस्तावत् तरुणीसक्त:।
वृद्धस्तावच्चिन्तासक्त:,
परे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्त:। (7)

बचपन में खेल में रूचि होती है , युवावस्था में युवा स्त्री के प्रति आकर्षण होता है, वृद्धावस्था में चिंताओं से घिरे रहते हैं पर प्रभु से कोई प्रेम नहीं करता है।

का ते कांता कस्ते पुत्र:,
संसारोऽयमतीव विचित्र:।
कस्य त्वं वा कुत अयात:,
तत्त्वं चिन्तय तदिह भ्रात:। (8)

कौन तुम्हारी पत्नी है, कौन तुम्हारा पुत्र है, ये संसार अत्यंत विचित्र है, तुम कौन हो, कहाँ से आये हो, बन्धु! इस बात पर तो पहले विचार कर लो

सत्संगत्वे निस्संगत्वं,
निस्संगत्वे निर्मोहत्वं।
निर्मोहत्वे निश्चलतत्त्वं
निश्चलतत्त्वे जीवन्मुक्ति:। (9)

सत्संग से वैराग्य, वैराग्य से विवेक, विवेक से स्थिर तत्त्वज्ञान और तत्त्वज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

व यसि गते क: कामविकार:,
शुष्के नीरे क: कासार:।
क्षीणे वित्ते क: परिवार:,
ज्ञाते तत्त्वे क: संसार:। (10)

आयु बीत जाने के बाद काम भाव नहीं रहता, पानी सूख जाने पर तालाब नहीं रहता, धन चले जाने पर परिवार नहीं रहता और तत्त्व ज्ञान होने के बाद संसार नहीं रहता।

.......शेष अगले अंक में

अनन्ययोग
(अव्यभिचारिणी भक्ति)

साभार : गीता साधक संजीवनी

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि।। 13/10

मुझ में अनन्ययोग के द्वारा अव्यभिचारिणी भक्ति का होना, एकान्त स्थान में रहने का स्वभाव होना और जन-समुदाय में प्रीति का न होना।

मयि	= मुझ में
अनन्ययोगेन	= अनन्ययोग के द्वारा
अव्यभि-चारिणी	= अव्यभिचारिणी
भक्तिः	= भक्ति का होना,
विविक्त- देशसेवित्वम्	= एकान्त स्थान में रहने का स्वभाव होना
च	= और
जनसंसदि	= जन-समुदाय में
अरतिः	= प्रीति का न होना।

'मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी'- संसार का आश्रय लेने के कारण साधक का देहाभिमान बना रहता है। यह देहाभिमान अव्यक्त के ज्ञान में प्रधान बाधा है। इसको दूर करने के लिये भगवान् यहाँ तत्त्वज्ञान का उद्देश्य रखकर अनन्ययोग द्वारा अपनी अव्यभिचारिणी भक्ति करने का साधन बता रहे हैं। तात्पर्य है कि भक्तिरूप साधन से भी देहाभिमान सुगमतापूर्वक दूर हो सकता है।

भगवान के सिवाय और किसी से कुछ भी पाने की इच्छा न हो अर्थात् भगवान के सिवाय मनुष्य, गुरु, देवता, शास्त्र आदि मेरे को उस तत्त्व का अनुभव करा सकते हैं तथा अपने बल, बुद्धि, योग्यता से मैं उस तत्त्व को प्राप्त कर लूँगा। इस प्रकार किसी भी वस्तु, व्यक्ति आदि का सहारा न हो और 'भगवान की कृपा से ही मेरे को उस तत्त्व का अनुभव होगा' इस प्रकार केवल भगवान का ही सहारा हों यह भगवान में 'अनन्ययोग' होना है।

अपना सम्बन्ध केवल भगवान के साथ ही हो, दूसरे किसी के साथ किंचनमात्र भी अपना सम्बन्ध न हों यह भगवान में 'अव्यभिचारिणी भक्ति' होना है। तात्पर्य है कि तत्त्वप्राप्ति का साधन (उपाय) भी भगवान् ही हों और साध्य (उपेय) भी भगवान् ही हों यही अनन्ययोग के द्वारा भगवान में अव्यभिचारिणी भक्ति का होना है।

जिस साधक में ज्ञान के साथ-साथ भक्ति के भी संस्कार हों, उसके लिये यह साधन बहुत उपयोगी है। भक्तिपरायण साधक अगर तत्त्वज्ञान का उद्देश्य रखकर एकमात्र भगवान का ही आश्रय ग्रहण करता है, तो केवल इसी साधन से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। गुणातीत होने के उपायों में भी भगवान ने अव्यभिचारिणी भक्ति की बात कही है (गीता चौदहवें अध्याय का छब्बीसवाँ श्लोक)।

शंकाः- यहाँ तो भक्ति से तत्त्वज्ञान की प्राप्ति बतायी गयी है और अठारहवें अध्याय के चौवनवें-पचपनवें श्लोकों में ज्ञान से भक्ति की प्राप्ति कही गयी है, ऐसा क्यों?

समाधानः- भक्ति दो प्रकार की होती हैं। साधन-भक्ति और साध्य-भक्ति। ऐसे ही ज्ञान भी दो प्रकार का होता हैं। साधन-ज्ञान और साध्य-ज्ञान। साध्य-भक्ति और साध्य-ज्ञान दोनों तत्त्वतः एक ही हैं। साधन-भक्ति और साधन-ज्ञान, ये दोनों साध्य -भक्ति अथवा साध्य-ज्ञान की प्राप्ति के साधन हैं। अतः जहाँ भक्ति से तत्त्वज्ञान-(साध्य-ज्ञान) की प्राप्ति की बात कही है, वह भी ठीक है और जहाँ ज्ञान से पराभक्ति-(साध्य-भक्ति)की प्राप्ति की बात कही है, वह भी ठीक है। अतः साधक को चाहिये कि उसमें कर्म, ज्ञान अथवा भक्ति, जिस संस्कार की प्रधानता हो, उसी के अनुरूप साधन में लग जाय। सावधानी केवल इतनी रखे कि उद्देश्य केवल परमात्मा का ही

हो, प्रकृति अथवा उसके कार्य का नहीं। ऐसा उद्देश्य होने पर वह उसी साधन से परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

शंका:- भगवान ने ज्ञान के साधनों में अपनी भक्ति को किस लिये बताया? क्या ज्ञानयोग का साधक भगवान की भक्ति भी करता है?

समाधान:- ज्ञानयोग के साधक (जिज्ञासु) दो प्रकार के होते हैं, भावप्रधान (भक्तिप्रधान) और विवेकप्रधान (ज्ञानप्रधान)। भावप्रधान जिज्ञासु वह है, जो भगवान का आश्रय लेकर तत्त्व को जानना चाहता है (गीता सातवें अध्याय का सोलहवाँ और तेरहवें अध्याय का अठारहवाँ श्लोक)। इसी अध्याय के दूसरे श्लोक में 'माम्', 'मम्', तीसरे श्लोक में 'मे', इस (दसवें) श्लोक में 'मयि' और अठारहवें श्लोक में 'मद्भक्त:' तथा 'मद्भावाय' पदों के आने से सिद्ध होता है कि अठारहवें श्लोक तक भावप्रधान जिज्ञासु का प्रकरण है। परन्तु उन्नीसवें से चौंतीसवें श्लोक तक एक बार भी 'अस्मद्' ('मैं' वाचक) पद का प्रयोग नहीं हुआ है, इसलिये वहाँ विवेकप्रधान जिज्ञासु का प्रकरण है। अत: यहाँ भावप्रधान जिज्ञासु का प्रसंग होने से ज्ञान के साधनों के अन्तर्गत भक्तिरूप साधन का वर्णन किया गया है।

दूसरी बात, जैसे सात्त्विक भोजन में पुष्टि के लिये घी या दूध की आवश्यकता होती है, तो वहाँ घी और दूध सात्त्विक भोजन के साथ मिलकर भी पुष्टि करते हैं और अकेले-अकेले भी पुष्टि करते हैं। ऐसे ही भगवान की भक्ति ज्ञान के साधनों में मिलकर भी परमात्मप्राप्ति में सहायक होती है और अकेली भी गुणातीत बना देती है (गीता चौदहवें अध्याय का छब्बीसवाँ श्लोक)। पातंजलयोगदर्शन में भी परमात्मप्राप्ति के लिये अष्टांगयोग के साधनों में सहायक रूप से 'ईश्वरप्रणिधान' अर्थात् भक्तिरूप नियम कहा है और उसी भक्ति को स्वतन्त्र रूप से भी कहा है। इससे सिद्ध होता है कि भक्तिरूप साधन अपनी एक अलग विशेषता रखता है। इस विशेषता के कारण भी ज्ञान के साधनों में भक्ति का वर्णन किया गया है।

विवेक प्रधान जिज्ञासु वह है, जो सत्-असत् का विचार करते हुए तीव्र विवेक-वैराग्य से युक्त होकर तत्त्व को जानना चाहता है (इसी अध्याय के उन्नीसवें से चौंतीसवें श्लोक तक)। विचार करके देखा जाय तो आजकल आध्यात्मिक जिज्ञासा की कमी और भोगासक्ति की बहुलता के कारण विवेक प्रधान जिज्ञासु बहुत कम देखने में आते हैं। ऐसे साधकों के लिये भक्तिरूप साधन बहुत उपयोगी है। अत: यहाँ भक्ति का वर्णन करना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

उपाय:- केवल भगवान को ही अपना मानना और भगवान का ही आश्रय लेकर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक भगवन्नाम का जप, कीर्तन, चिन्तन, स्मरण आदि करना ही भक्ति का सुगम उपाय है।

'विविक्तदेशसेवित्वम्' मैं एकान्त में रहकर परमात्म तत्त्व का चिन्तन करूँ, भजन-स्मरण करूँ, सत्-शास्त्रों का स्वाध्याय करूँ, उस तत्त्व को गहरा उतरकर समझूँ, मेरी वृत्तियों में और मेरे साधन में कोई भी विघ्न-बाधा न पड़े, मेरे साथ कोई न रहे और मैं किसी के साथ न रहूँ' साधक की ऐसी स्वाभाविक अभिलाषा का नाम 'विविक्तदेश-सेवित्व' है। तात्पर्य यह हुआ कि साधक की रुचि तो एकान्त में रहने की ही होनी चाहिये, पर ऐसा एकान्त न मिले तो मन में किंचिन्मात्र भी विकार नहीं होना चाहिये। उसके मन में यही विचार होना चाहिये कि संसार के संग का, संयोग का तो स्वत: ही वियोग हो रहा है और स्वरूप में असंगता स्वत: सिद्ध है। इस स्वत: सिद्ध असंगता में संसार का संग, संयोग, सम्बन्ध कभी हो ही नहीं सकता। अत: संसार का संग कभी बाधक हो ही नहीं सकता।

केवल निर्जन वन आदि में जाकर और अकेले पड़े रहकर यह मान लेना कि 'मैं एकान्त स्थान में हूँ'

वास्तव में भूल ही है यह, क्योंकि सम्पूर्ण संसार का बीज यह शरीर तो साथ में है ही। जब तक इस शरीर के साथ सम्बन्ध है, तब तक सम्पूर्ण संसार के साथ सम्बन्ध बना ही हुआ है। अत: एकान्त स्थान में जाने का लाभ तभी है, जब देहाभिमान के नाश का उद्देश्य मुख्य हो।

वास्तविक एकान्त वह है, जिसमें एक तत्त्व के सिवाय दूसरी कोई चीज न उत्पन्न हुई, न है और न होगी। जिसमें न इन्द्रियाँ हैं, न प्राण हैं, न मन है और न अन्त:करण है। जिसमें न स्थूलशरीर है, न सूक्ष्मशरीर है और न कारणशरीर है। जिसमें न व्यष्टि शरीर है और न समष्टि संसार है। जिसमें केवल एक तत्त्व-ही-तत्त्व है अर्थात् एक तत्त्वके सिवाय और कुछ है ही नहीं। कारण कि एक परमात्मतत्त्व के सिवाय पहले भी कुछ नहीं था और अन्त में भी कुछ नहीं रहेगा। बीच में जो कुछ प्रतीत हो रहा है, वह भी प्रतीति के द्वारा ही प्रतीत हो रहा है अर्थात् जिनसे संसार प्रतीत हो रहा है, वे इन्द्रियाँ, अन्त:करण आदि भी स्वयं प्रतीति ही हैं। अत: प्रतीति के द्वारा ही प्रतीति हो रही है। हमारा (स्वरूप का) सम्बन्ध शरीर और अन्त:करण के साथ कभी हुआ ही नहीं, क्योंकि शरीर और अन्त:करण प्रकृति का कार्य है और स्वरूप सदा ही प्रकृति से अतीत है। इस प्रकार अनुभव करना ही वास्तव में 'विविक्तदेशसेवित्व' है।

'अरतिर्जनसंसदि'- साधारण मनुष्य-समुदाय में प्रीति, रुचि न हो अर्थात् कहाँ क्या हो रहा है, कब क्या होगा, कैसे होगा आदि-आदि सांसारिक बातों को सुनने की कोई भी इच्छा न हो तथा समाचार सुनाने वाले लोगों से मिलें, कुछ समाचार प्राप्त करें ऐसी किंचिन्मात्र भी इच्छा, प्रीति न हो। परन्तु हमारे से कोई तत्त्व की बात पूछना चाहता है, साधन के विषय में चर्चा करना चाहता है, उससे मिलने के लिये मन में जो इच्छा होती है, वह 'अरतिर्जनसंसदि' नहीं है। ऐसे ही जहाँ तत्त्व की बात होती हो, आपस में तत्त्व का विचार होता हो अथवा हमारी दृष्टिमें कोई परमात्मतत्त्व को जानने वाला हो, ऐसे पुरुषों के संगकी जो रुचि होती है, वह जनसमुदाय में रुचि नहीं कहलाती, प्रत्युत वह तो आवश्यक है। कहा भी गया हैं

संग: सर्वात्मना त्याज्य: स चेत्त्यक्तुं न शक्यते।
स सद्भि: सह कर्तव्य: सतां संगो हि भेषजमू।।
(मार्कण्डेयपुराण)

अर्थात् आसक्तिपूर्वक किसी का भी संग नहीं करना चाहिये, परन्तु अगर ऐसी असंगता न होती हो, तो श्रेष्ठ पुरुषों का संग करना चाहिये। कारण कि श्रेष्ठ पुरुषों का संग असंगता प्राप्त करने की औषध है।

गीता अध्याय 14 श्लोक 26 में भी यही बात कही गई है।

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते।
स गुणांसमतीत्यैतान् ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

जो व्यक्ति अव्यभिचारी भक्तियोग (अनन्य भक्ति) के द्वारा मेरा सेवन करता है, वह इन तीनों गुणों (सत्व, रज, तम) को पार करके ब्रह्म (परमात्मा) को प्राप्त करने योग्य हो जाता है।

'अव्यभिचारेण' पद का तात्पर्य है कि भगवान के अलावा दूसरे किसी का सहारा न हो। सांसारिक सहारा तो दूर रहा, ज्ञानयोग, कर्मयोग, ध्यानयोग आदि योगों (साधनों) का सहारा भी न हो और 'भक्तियोगेन' पद का तात्पर्य है कि केवल भगवान का ही सहारा हो, आशा हो, बल हो, विश्वास हो। 'सेवते' का तात्पर्य है कि अव्यभिचारी भक्तियोग के द्वारा भगवान का भजन करे, उनकी उपासना करे, उनके शरण हो जाय, उनके अनुकूल चले।

'स गुणांसमतीत्यैतान्' पद का तात्पर्य है कि जो अनन्यभाव से भगवान के शरण हो जाता है उसे तीनों गुणों से पार होने के लिये कुछ करना नहीं पड़ता है, बल्कि भगवान की कृपा से वह तीनों गुणों से पार हो जाता है और ब्रह्म (परमात्मा) को प्राप्त करने योग्य हो जाता है, 'ब्रह्मभूयाय कल्पते'।

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

.....मोह, मात्सर्य आदि जो दुर्गण है ये मनुष्य पर अपना प्रभाव क्यों जमा रहे हैं? क्योंकि हमने नाम की शरण नहीं ली। यह जो नाम है यह आधार है। अभी आजकल देखा होगा आपने कि बालाजी का दर्शन करने जाना हो तो आधार कार्ड की जरूरत है। तो हमारा जो आधार है वह नाम है और हमारा ही नहीं यहाँ तक कि ऋषि वाल्मीकि जी का भी आधार क्या है? वह आधार केवल और केवल नाम है।

कल्याणानां निधानं कलीमल मथनं पावनं पावनानां।
पाथेयं यं नूमुक्षो सपदी परिपदः प्राप्तये प्रस्थीतस्य।।
विश्रामस्था नेमकं कवीवर वचसां जीवनं सज्जनानां।
बीजम् धर्म द्रुमस्यः प्रभूवतु भवताम् भूतये राम नाम।।

सकल कल्याणों का निवास स्थान, कलियुग के पापों का नाशक, पावनों को भी पावन करने वाला, परमपद को पाने की लालसा से प्रस्थान करने वाले मुमुक्षुओं का पाथेय, कविकुल चूड़ामणि महर्षि वाल्मीकि आदि कवियों की सुधन्या वाणी के लिये एकमात्र विश्राम स्थान, सत्पुरुषों का जीवन और धर्म रूपी वृक्ष का बीज रामनाम आप सभी के लिये निःश्रेयस का दायक हो। व्यास वाल्मीकि की वाणी भी जहाँ आकर के विश्राम प्राप्त करती है, जो जानने की इच्छा करने वाले लोग हैं उनका प्राप्ति स्थल राम नाम है। जिनको कुछ प्राप्त करना है उनका प्राप्ति स्थल राम नाम है और धर्म का मूल श्री राम नाम है।

हे देवी! इस कलयुग में जो तप किया जा रहा है- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्स्र्य इन सब दोषों के रहते हुए किया जा रहा है। इसलिए जप का फल जो है नष्ट हो गया है। ब्राह्मण जो है धन के लोभ के कारण घर-घर में कथा कहते घूम रहे हैं। पहले से दक्षिणा तय कर लेते हैं। फलां अनुष्ठान करना है, यह अनुष्ठान करना है, वह अनुष्ठान करना है। इसलिए घर-घर में धन के लोभ से जो भागवत जी की गई इसलिए कथा का सार नष्ट हो गया और जो तीर्थो में बैठे हैं, वे पाखंड करते हैं। बढ़िया तिलक लगाना, अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनना। परंतु निजी जीवन में कुछ नहीं। तीर्थ का महत्व क्यों कट रहा है? तीर्थ में रहने वाले जो है उन्हीं के कारण तीर्थ का महत्व घट रहा है।

हमारे गुरुजी क्या कह रहे थे उस दिन स्थान मंडपम में कि पहले यहाँ कुछ समय पहले तिरुमला में कोई रहता नहीं था। नीचे से पैदल चल करके आते थे और दर्शन करके वापस नीचे चले जाते थे। यहाँ तक कि पुजारी भी ऊपर नहीं रहते थे। पूजा करने आते थे, पूजा करके वापस नीचे चले जाते थे और जब वे इस वेंकटाद्री पर्वत पर आते थे तो साष्टांग दंडवत प्रणाम पूर्वक निवेदन करते थे कि हे प्रभु! मैं आपकी अंक में आ रहा हूँ, मेरे पांव का आपसे स्पर्श होगा इसलिए मुझे क्षमा करना। यह कहकर के हम लोग यहाँ दर्शन करने आते थे। अब बताइए पांव तो हम सीधा ही रखते हैं यहाँ आकर। गाड़ी में बैठकर सीधे यहीं आकर उतरते हैं। हो न हो इसी से तीर्थो का महत्व घट रहा है।

देवी! और जो पंडित है, पंडित अर्थात समझदार व्यक्ति जिसकी बुद्धि धर्म और अधर्म का विभाग करना जानती है, कलयुग के पंडित कैसे हैं? बोले सब सकाम कर्मो में उलझे हुए हैं। खूब अनुष्ठान करवा रहे हैं। सत चंडी पाठ करवा रहे हैं, किसी की बहू नहीं आ रही है तो उसका अनुष्ठान हो रहा है, किसी के महामृत्युंजय का अनुष्ठान हो रहा है, किसी के अच्छे पति की प्राप्ति का अनुष्ठान हो रहा है। शास्त्रों में तो सब बताया गया है। लेकिन कहीं भी वैष्वता का दर्शन नहीं हो रहा है।

हे देवी! इस कलियुग का यह युग धर्म है। इसलिए आप बिल्कुल चिंता मत करो परमात्मा हम सब लोगों की खूब समीप है, खूब समीप रहते हुए सब देख रहे हैं। भक्ति ने कहा हे देवर्षि नारद! आप तो धन्य हैं, आप जैसे संत धन्य हैं।

जयति जगति मायां यस्य कायाधवस्ते वचन–रचनमेकं केवलं चाकलय्य। ध्रुवपदमपि यातो यत्कृपातो ध्रुवोऽयं सकल–कुशलपात्रं ब्रह्मपुत्रं नतोऽस्मि।

आपके उपदेश मात्र से कयाधु पुत्र प्रहलाद ने माया पर विजय प्राप्त कर ली थी। ध्रुव ने भी आपकी कृपा को शिरोधार्य कर ध्रुवपद प्राप्त किया था। आप सकलकुशल रूप मंगल स्वरूप ब्रह्मा जी के पुत्र को मैं नमस्कार करता हूँ।

अब नारद जी भक्ति के दुख की निवृत्ति के लिए प्रयास करते हैं और उनको समझाते हैं। अरे देवी! आप भक्ति हो, भगवान की सबसे श्रेष्ठ प्रिया हो। आपके आधार पर ही तो परमात्मा सब भक्तों से मिलते हैं।

व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेन्द्रस्य का कुब्जायाः किमु नामरूपमधिकं किं तत्सुदाम्नो धनम्। वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषं भक्त्या तुष्यति केवलं न च गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः।।

अर्थात् 'व्याध (रत्नाकर) का कोई पवित्र आचरण नहीं था लेकिन भक्ति द्वारा वह महापुरुष (वाल्मिकी) बन गया। ध्रुव ने इतनी अल्पायु में ही भक्ति द्वारा ध्रुव लोक प्राप्त कर लिया। गजेन्द्र के पास कौन सी विद्या थी? विदुर की कौन सी ऊँची जाति थी? यदुपति उग्रसेन का कौन सा पराक्रम था? कुब्जा का कौन सा सुन्दर रूप था? सुदामा के पास कौन सा धन था? फिर भी उन लोगों को भगवान की प्राप्ति हो गयी। इसका एक मात्र कारण है कि भगवान को केवल भक्ति ही प्यारी है। वे केवल भक्ति से ही संतुष्ट होते है।

अच्छे आचरणों से परमात्मा मिलते तो व्याध तो दिनभर जीव मारता फिरता था। बोले परमात्मा पढ़े लिखों से रीझते हैं तो हाथी के पास कौनसी विद्या थी? हाथी तो सबसे मूढ़ होता है। फिर भी परमात्मा उस पर रीझकर के उसका उद्दार किये न। कोई कहे कि परमात्मा तो बड़ी जाति के जैसे ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य को मिलते है तो ऐसा भी नहीं है।

दुर्योधन के मेवा त्यागे, शाक विदुर घर खाई इसका अर्थ यह भी नहीं है कि ऊंची जाति वालों से परमात्मा मिलते है।

नीच नीच सब तर गये, राम भजन लवलीन।
जाति के अभिमान में, डूबे सब कुलीन।।

हम लोगों को मन में रह गया कि हमने ब्राह्मण घर में जन्म लिया, हमारा तो उद्दार होना ही होना है, ऐसा भी नहीं है। इसलिए जाति का अभिमान नहीं करना है। परमात्मा न बल से राजी होता है। अग्रसेन जिनके बेटे ने उनको जेल में कैद कर दिया तब भी उग्रसेन को भगवान मिले हैं न।

कोई कहते हैं भाई सुंदर–सुंदर लोग हो, रूपवान हो उनसे भगवान मिलते हैं। काले कलूटे लोगों को भगवान नहीं मिलते हैं। गोरे–गोरे लोगों को भगवान मिलते हैं। सुंदर–सुंदर लोगों को भगवान मिलते हैं। तो यह बात भी गलत है। वह तीन जगह से टेढ़ी थी उनको परमात्मा कृष्ण मिले थे के नहीं मिले थे?

धनवान को यदि परमात्मा मिलते तो सुदामा जी को कैसे मिल जाते हैं? इसलिए परमात्मा किसी उपकरणों से राजी होने वाले नहीं है। परमात्मा केवल और केवल एक ही गुण के पीछे भागे दौड़े आते हैं, वह है केवल भक्ति।

गोपियों ने कौनसा तप किया? ग्वालों ने कौनसा तप किया? उनके साथ रह रहे हैं, उनका जूठन खा रहे हैं क्यों? क्योंकि उनकी ऐसी भक्ति है। इसलिए देवी आप चिंता मत करिए। आपके माध्यम से तो जो बुलाना चाहे वह.......शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

बछड़ा (शिवा): माँ आज तुम घर क्यों नहीं चल रही हो? प्रतिदिन तो तुम दिन अस्त होने से पहले ही घर पर मेरे पास आ जाती थी? माँ अब बहुत अंधेरा हो रहा है, जंगली जानवरों के बोलने की आवाजें आ रही है। चलो न घर। मुझे यहाँ बहुत डर लग रहा है।

गोमाता: बेटा डरो मत, अब तो हमको सदैव ऐसी डरावनी रातों में अकेले कहीं भी रहने की आदत डालनी पड़ेगी। ग्वाले ने आज जब तुझे मेरे साथ घर से निकाला था तो मैं समझ गई कि अब उस घर में हमारे लिए कोई स्थान नहीं रहा।

शिवा: क्यों माँ, हमने ऐसी क्या गलती की है जो घर से ही निकाल दिया और मुझ इतने छोटे वत्स को यह जानते हुए भी साथ भेज दिया कि तेरे तो पांवों में कीड़े पड़े हुए हैं, गहरे घाव हैं, तू जंगली जानवरों से मेरी रक्षा कैसे करेगी?

गोमाता: बेटा अपना ग्वाला बहुत स्वार्थी है। मेरे 3 थन खराब होने से इस बार दूध बहुत कम हो रहा था, ऊपर से पांवों में कीड़े पड़ने से बहुत दर्द हो रहा है। इस दर्द ने तो बिल्कुल ही दूध कम कर दिया। ग्वाले ने कोई उपचार नहीं करवाया तो चारों पैर खराब हो गए, तीन थन चले गए। इसलिए हमें घर से निकाल दिया। अब हम भगवान भरोसे खुले आसमान के नीचे जीने हेतु मजबूर हैं। मेरे दूध आता तो यह ग्वाला अपने को किसी अन्य ग्वाले को बेचता तो कम से कम ये हाल तो नहीं होते।

शिवा: माँ यह डरावनी काली रात कैसे गुजारेंगे? यहाँ जंगली जानवर बहुत हैं, हमको खा जायेंगे। मुझे तो बहुत डर लग रहा है। माँ मुझे अपने आंचल छुपा ले, गले से लगा ले के और मेरा कोई नहीं, और मेरा कोई नहीं।

गोमाता: नहीं बेटा! डर मत तेरी माँ साथ में है। एक सींग से सबको बींध दूंगी। तुझे कोई छू भी नहीं सकेगा। तूं मेरे पास में रहना, इधर-उधर भागना मत।

इतने में तेज-तेज हवाएं चलने लगी। आकाश में बिजलियाँ चमकने लगी।

गोमाता: मेरे वत्स! लगता है भारी तूफान के साथ बरसात आने वाली है। वे पेड़ दिख रहे हैं, वहाँ देखते हैं कोई घर होगा। भागो, वहाँ चलते हैं, कहीं सिर छिपाने की जगह मिल जाय।

गोमाता पांवों से पीड़ित है फिर भी लंगड़ाकर भागने का प्रयास कर रही है। उसे अपने नन्हे वत्स शिवा को इस तूफान से बचाना जो है। दोनों वहाँ पहुँच जाते हैं, किसी के खेत में सुनसान ढ़ाणी के खण्डहर है पेड़ों के बीच में। उसमें एक टूटा हुआ सा झोंपड़ा है। उसके नीचे माँ-बेटा घुस गये। तेज हवा के साथ मूसलाधार बरसात आरम्भ हो गई। शिवा अपनी माँ से चिपककर खड़ा है। शिवा अभी एक महीने का ही हुआ है। उसने बरसात पहली बार देखी है। माँ-बेटा थककर बैठ गये। झोंपड़ा पुराना था इस कारण थोड़ा-थोड़ा पानी टपक रहा है, मगर सिर छुपाने को अच्छी जगह मिल गयी। ऐसी भारी बरसात रातभर हुई। चारों तरफ पानी ही पानी भर गया। यह ढ़ाणी थोड़े ऊँचे भाग पर थी, जिससे इनका बचाव हो गया। रातभर दोनों आराम से बैठे रहे।

सुबह हुई, बाहर देखा तो पूरा क्षेत्र जलाकार हो गया। सीजन की पहली बरसात है। माँ खड़ी हुई। शिवा ने बचा हुआ चौथा थन पकड़ा और दूध पीने लगा। दूध तो कम ही होता है, मगर उसी से शिवा संतुष्टी कर लेता है।

गोमाता को भी भूख लगी। झोंपड़ी में पिछले वर्ष का न बिकने योग्य बचा हुआ चारा पड़ा था, उसे गोमाता खाने लगी।......शेष अगले अंक में

श्री अभिनव ब्रज मण्डल अर्बुदारण्य नंदगांव केसुआ में मनाया गुरु पूर्णिमा महोत्सव और इसी के साथ आरम्भ हुआ गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में देशभर से उपस्थित हुए पूज्य संतों, साधकों एवं गोभक्तों द्वारा दिनांक १० जुलाई को श्री अभिनव ब्रज मण्डल में श्रद्धाभाव से गुरु पूर्णिमा महोत्सव का पर्व मनाया गया। महोत्सव में बड़ी संख्या में पूज्य संतों, साधकों और गोभक्तों ने प्रभात फेरी निकाली, ठाकुरजी श्री गोवर्धनाथजी की पूजा- अर्चना की, गोपूजन किया तथा हरिहर पूजन किया।

व्यास पूर्णिमा के शुभ अवसर पर वेद व्यास जी और दत्त चरण पादुका का पूजन हुआ। इसी दिन श्री अभिनव ब्रज मण्डल में संतों के गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास महोत्सव का भी मंगलमय शुभारम्भ हुआ। यह चातुर्मास ६ सितम्बर पर्यन्त चलेगा।

इस शुभ अवसर पर पूज्य गोवत्स श्री राधा कृष्ण जी महाराज ने गोभक्तों को आशीर्वचन में कहा कि इस भूमण्डल पर जितना भी ज्ञान उपलब्ध है वो सारा ज्ञान श्री वेदवयास जी महाराज की ही देन है। उन्होंने ही सारा ज्ञान सहजता से सरलता उपलब्ध कराया। कई लोग कहते हैं कि ब्राह्मणों ने दूसरे वर्णों और महिलाओं का वेद पढ़ने का अधिकार ही नहीं दिया तो उनको ज्ञान होगा कैसे? जब ब्राह्मणों के अलावा किसी को ज्ञान समझ में नहीं आता है तो ब्राह्मण अपनी मनमानी से कोई भी बात कहेगा कि वेदों में ऐसा लिखा है। वेदव्यवास जी महाराज को मन में इस बात की पीड़ा हुई कि भूतल पर कोई व्यक्ति यह शिकायत नहीं करे कि मैं ज्ञान से वंचित हुआ, मुझे ज्ञान नहीं मिला तो उन्होंने चारों वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा भूतल पर जितने भी सत शास्त्र थे उनका सार निकालकर एक लाख श्लोकों की महाभारत शास्त्र बना दिया। जिसने ये एक लाख श्लोक पढ़ लिये उसने भूतल का सारा पढ़ लिया। जिसने महाभारत को पूरा पढ़ लिया उसने चारों वेद और सकल शास्त्र पढ़ लिये।

लोगों ने अफवाह फैलाकर कि महाभारत पढ़ने से घर में महाभारत होती है, महाभारत को युद्ध का ग्रन्थ बना दिया। जबकि ऐसा नहीं है। महाभारत ग्रन्थ में क्या एक लाख श्लाकों में युद्ध का ही वर्णन है? अगर ऐसा होता तो इतने वर्षों यह ग्रन्थ जीवन्त कैसे रहता? युद्ध की चर्चा तो बहुत संक्षिप्त है, बाकी सम्पूर्ण ज्ञान चर्चा है। तो ऐसा परोपकार का कार्य श्री व्यास जी ने किया। गुरु बनकर पूरे विश्व को राह दिखाई। इसलिये उनके जन्म दिन को हम गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज श्री ने अपने आशीर्वचन में कहा कि वेदव्यास जी की वाणी में लौकिक ज्ञान भी है, पारलौकिक ज्ञान भी है, व्यावहारिक ज्ञान भी है, भाषाई ज्ञान भी है, तकनीकी ज्ञान

भी है और वो अवधूतों का ज्ञान भी है। सनातन धर्म में आचार्य कोटि के जितने भी गुरु हुए हैं उनमें सबके मूर्धन्य या उनको सबको आत्मसात् करने वाले या उन सब आचार्यों को प्रकाश मिला है वह भगवान श्री वेदव्यास जी से ही मिला है, उन सबके परम आचार्य भगवान वेदव्यास जी ही है।

महाराज श्री ने कहा कि गीता ही गुरु का उपदेश है। गीता पर परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज ने साधकों के कल्याण हेतु साधक संजीवनी नामक जो सरल हिन्दी टीका लिखी है, उसमें प्रवेश हेतु गीता माधुर्य नामक पुसतक को पढ़ना चाहिये। विस्तृत प्रवचन पृष्ठ ४ पर देखें।

श्री सुरभि पंचगव्य आरोग्यकुलम का हुआ शुभारम्भ

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज श्री के पावन सानिध्य में, पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज की मंगलमयी उपस्थिति में दिनांक १० जुलाई, गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पंचगव्य आधारित चिकित्सा आरोग्यधाम का भव्य शुभारम्भ हुआ। मात्र ५०० रु. प्रतिदिन के अल्प शुल्क पर यहाँ रुककर स्वास्थ्य लाभ लिया जा सकता है। आवास, भोजन, औषधि आदि किसी के लिये भी कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जायेगा।

यहाँ गोसेवा के साथ मिलता है शरीर, मन और आत्मा को दिव्य आरोग्य का वरदान। इसके लिये सम्पर्क करें :

डॉ मानवेन्द्र सिंह **9982676800**
डॉ उमा **9429123003**

श्री अभिनव ब्रज मण्डल में हरियालो राजस्थान के तहत वृहद पौधारोपण

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी की पावन प्रेरणा से पूज्य आचार्य श्री दयानंदजी शास्त्री जी की मंगलमयी उपस्थिति में दिनांक २५ जुलाई को श्री अभिनव ब्रज मण्डल, केसुआ जालोर सिरोही संसदीय क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ताओं ने वृहद वृक्षारोण कर पर्यावरण संरक्षण को जन चेतना से जोड़ने का संकल्प लिया। सभी ने पूरे अभिनव व्रज मण्डल में लगे लाखों हरे-भरे वृक्षों को देखकर श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा परिवार की सराहना की। श्री अभिनव ब्रज मण्डल केसुआ में इस बार ५० हजार पौधे लगाने का लक्ष्य है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला प्रभारी मंत्री श्री के.के. विश्नोई ने की। इस कार्यक्रम में सरकार के मुख्य सचेतक श्री जोगेश्वर गर्ग, जालोर भाजपा अध्यक्ष श्री जसराज पुरोहित, आहोर विधायक श्री छगनसिंह राजपुरोहित, जिला महामंत्री श्री प्रकाशचन्द छाजेड़, पूर्व राज्य मंत्री श्री भूपेन्द्र देवासी, सिरोही जिला प्रमुख श्री अर्जुनराम पुरोहित, सिरोही भाजपा अध्यक्ष श्रीमती रक्षा भण्डारी, विधायक श्री समारामजी गरासिया, तीनों पूर्व विधायक श्री नारायण सिंह देवल, श्री शंकरसिंह राजपुरोहित और श्री पूराराम चौधरी, रेवदर प्रधान श्रीमती राधिका देवासी तथा सैंकड़ों पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं सिरोही जिले के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा परिवार की ओर से कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथ सिंह राजपुरोहित, महानिदेशक श्री धनराज चौधरी, कोषाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, गोवत्स श्री

विट्ठलकृष्णजी, श्री किशोर सिंह नेतरा, श्री ब्रह्मदत्त जी पुरोहित, श्री धर्मशरण जी शर्मा, बलराम चौधरी, श्री बलवंत राजपुरोहित, श्री हीरसिंह जी राठौड़ व सैंकड़ों गोभक्त उपस्थित रहे। मंच संचालन श्री आलोक सिंहल सी.ओ. नयास ने किया।

सुरधेनु धर्म ओढ़नी यात्रा

गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव में जन-जन को सहभागी बनाने के उद्देश्य से अपने अपने गाँव और शहरों से श्री अभिनव ब्रज मण्डल नंदगाँव तक सनातन धर्म प्रेमियों द्वारा सुरधेनु धर्म ओढ़नी यात्रा निकाली जायेगी। इसके तहत प्रत्येक घर से कम से कम एक रुपया और एक मुट्ठी अनाज संकलित करके उक्त यात्रा को लेकर गोभक्त अभिनव ब्रज मण्डल पधारेंगे। उक्त श्री अन्न तथा धर्मनिधि का उपयोग श्री गोपालजी को भोग लगाकर चातुर्मास में विराजमान संत महात्माओं को भिक्षा प्रसाद एवं अशक्त गोवंश को भण्डारा प्रसाद करवाने में किया जायेगा। अतः अधिक से अधिक आमजन को इसमें सम्मिलित होकर धर्मलाभ लेने की अपील की जाती है।

कर्णावती महानगर में श्री शिव महापुराण कथा का दिव्य आयोजन हुआ संपादित

कर्णावती महानगर (अहमदाबाद) में १८ से २४ जुलाई पर्यन्त पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज के मुखारविंद से वेद मंदिर में दिव्य श्री शिव महापुराण कथा एवं श्री शिव पार्वती विवाह उत्सव का आयोजन किया गया। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा, अग्रवाल सेवा समिति व श्याम सेवा ट्रस्ट के सहयोग एवं आर.के. ट्रेडिंग कंपनी परिवार श्री राजकुमार जी गुप्ता, व श्री दिनेश जी जगनानी परिवार के यजमानत्य, श्री आलोक जी सिंहल के संयोजकत्व एवं श्री कमलेश जी जैन, श्री नंदकिशोर जी मूंदड़ा, श्री मुकेश जी चाचान, श्री राम अवतार जी बजाज, श्री विवेक कुमार जी सर्राफ, श्री ललित जी अग्रवाल, श्री सुभाष जी जोड़ीवाल, श्री आनंद जी अग्रवाल श्री बालमुकुंद जी अग्रवाल एवं श्री अंजनी जी गुप्ता के आयोजकत्व में भगवत कृपा से लगभग ११०० गाड़ी हरे चारे की सेवा प्राप्त हुई।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की सूरत शाखा की बैठक सम्पन्न

आगामी शारदीय नवरात्र में सूरत महानगर में आयोजित होने वाले श्रीराम कथा महोत्सव की कार्य योजना हेतु ६ जुलाई एवं १६ जुलाई को दो बैठकों का आयोजन किया गया। महोत्सव में पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज के मुखारविंद से श्रीराम कथा, गोपूजन-गोअर्चन, रामायणजी पूजन, सुरभि महायज्ञ, पोथी यात्रा, श्री मीरा-माधव रास गरबा, गो आशीर्वाद सभा सहित विभिन्न धार्मिक एवं गोभक्तिमय आयोजन संपादित होंगे। बैठकों में प्रभारी श्री आलोक जी सिंहल, श्री राकेश जी कंसल, श्री विनोद जी अग्रवाल, श्री संदीप जी पोद्दार, श्री मालाराम जी मनोरा, श्री लाल सिंह जी रणधीसर, श्री विपिन जी जालान, श्री तुलसी भाई मनोरा सहित सैकड़ों गोभक्तों ने उत्साह से भाग लिया और रामकथा के दौरान व्यवस्थाओं में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

दिल्ली मुख्यमंत्री से भेंट कर चातुर्मास महोत्सव में पधारने हेतु दिया निमंत्रण

दिल्ली में गोसेवा कार्यों के विस्तार एवं चातुर्मास महोत्सव के निमंत्रण हेतु मुख्यमंत्री श्रीमती रेखाजी गुप्ता से श्री गोधामा महातीर्थ पथमेड़ा के प्रतिनिधि मंडल ने भेंट की। मुख्यमंत्री महोदया ने पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया। प्रतिनिधि मंडल में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री आलोक जी सिंहल श्री एस. एन बंसल जी, श्री संजय जी गर्ग, श्री यशपाल जी गुप्ता, श्री आलोक जी जगवायन, श्री विनय सिंहल सहित गोभक्त उपस्थित रहे।

चातुर्मास महोत्सव के अंतर्गत चल रहे ज्ञान यज्ञ का लाभ लें

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के पावन सानिध्य में चल रहे गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास महोत्सव के अंतर्गत प्रतिदिन प्रातः ९ से ११ बजे तक श्री गोमहिमा दत्तवाणी सतसंग परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज के श्रीमुख से तथा दोपहर बाद २ से ५ बजे तक श्री रामचरितमानस कथा सतसंग लाभ पूज्य आचार्य श्री दयानंद जी शास्त्री जी के मुखारविन्द से प्राप्त हो रहा है। अनुरोध है कि इष्ट मित्रों और परिवार सहित पधारकर इस अद्वितीय धर्मज्ञान सतसंग का लाभ प्राप्त करें।

दिनांक 2 सितंबर से 4 सितंबर तक आयोजित होगी श्री गोभक्तमाल कथा सत्संग

अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुन्यार्थ न्यास के राष्ट्रीय मार्गदर्शक परम गो उपासक जगद्गुरू द्वाराचार्य पूज्य श्री राजेन्द्रदासजी देवाचार्यजी महाराज, श्री मलूकपीठाधीश्वर, श्रीधाम वृंदावन का मंगलमय आगमन १ सितंबर सायंकाल श्री गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव, अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगाँव में होने जा रहा है। २ सितंबर से ४ सितंबर पर्यंन्त पूज्य मलूकपीठाधीश्वरजी के मुखारविन्द से श्री गोभक्तमाल कथा सत्संग का दिव्य लाभ प्राप्त होगा। आप सभी गोप्रेमी सनातनी सज्जनों से आग्रह है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर पूज्य महाराजजी का वाणी प्रसाद एवं चातुर्मास में उपस्थित रह कर गोदर्शन, गोपूजन एवं संतों के दर्शन का लाभ प्राप्त करें।

भगवान् कहाँ हैं? भगवान वहाँ हैं, जहाँ 'कहाँ-यहाँ-वहाँ' नहीं हैं। अर्थात् भगवान् देश, काल, वस्तु, व्यक्ति आदि से सर्वथा अतीत हैं। भगवान का कहीं भी अभाव नहीं है। केवल उनको देखने वाले का अभाव है। जिसकी दृष्टि संसार पर रहती है, वह कहता है कि 'भगवान कहाँ हैं?' और जिसकी दृष्टि भगवान पर रहती है, वह कहता है कि 'भगवान कहाँ नहीं हैं?''

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

तुलादान महादान

आप स्वयं अपना तुलादान करवा के सामग्री की सेवा राशी
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा भिजवा कर पुण्य प्राप्त कर सकते है।

गोघृत	- 1200/-	खोपरा	- 200/-
तेल	- 200/-	लापसी	- 101/-
गवार	- 75/-	गुड़	- 50/-
अनाज	- 25/-	नमक	- 25/-
पोष्टिक	- 25/-	घासचारा	- 11/-

तुलादान से अनन्त पुण्य प्राप्त होते है तथा अनिष्टों का नाश होता है।

प्रकाशन तिथी : 01 अगस्त 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास (रजि. ट्रस्ट)

संस्थापकः परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज

प्रशासनिक कार्यालय : श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नन्दगाँव, केसुआ, रेवदर, सिरोही, राजस्थान-307512
www.godhampathmeda.org nyasao@godhampathmeda.org 8209930427

दिनांक :- 14.07.2025

आदरणीय गोभक्त श्री
सम्माननीय आजीवन सदस्य

सादर हरिस्मरण, जय गोमाता जय गोपाल।

विषय :- श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास की 'सुरभि संसद' के वार्षिक अधिवेशन में पधारने हेतु सूचना।

महोदयजी,

उपरोक्त विषयांतर्गत सविनय निवेदन है कि श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की सुरभि संसद का वार्षिक अधिवेशन प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के निर्देशानुसार 24 अगस्त 2025 को प्रातः 11 बजे से अभिनव ब्रजमंडल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य, केसुआ, तहसील-रेवदर, जिला-सिरोही (राजस्थान) में आयोजित किया जा रहा है। इस सुरभि संसद में गोसेवा कार्यों की प्रगति एवं वर्तमान स्थिति के साथ ही भावी योजनाओं, लक्ष्यों और कार्यक्रमों पर विचार मंथन कर विगत अधिवेशन उपरांत सम्पादित गोसेवा कार्यों और योजनाओं की अद्यतन स्थिति पर चर्चा की जाएगी। आपकी उपस्थिति सादर निवेदित है। इस बार परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में **श्री गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव** का दिव्य आयोजन 10 जुलाई से 6 सितंबर 2025 पर्यन्त अभिनव ब्रजमंडल में ही हो रहा है। आपके पधारने से आपको चातुर्मास अनुष्ठान का शुभ अवसर भी प्राप्त होगा।

आप अपने पधारने की सूचना 10 अगस्त तक अवश्य प्रदान कर दिरावें, जिससे आपके आवास एवं सत्कार की उचित व्यवस्था की जा सके।

जय श्री गोवर्धननाथजी।

(अर्जुनसिंह राजपुरोहित)	(आलोक सिंहल)	(गोवत्स राधाकृष्ण)
केन्द्रीय महामंत्री	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी	कार्यकारी प्रधान संरक्षक